May 2020 30:00

मरयम

जब आपका शौहर गुस्से में हो

मेरे बन्दे मुझे पुकार!

जन्नत के महल की एक ईंट

सब कुछ खुदा की नज़र में है

रमज़ान,
कुरआन और दुआ

आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी

إنا لله وإنا إليه راجعون

25 अप्रेल 2020

अभी पिछलों दिनों यह वह दिन था जब हमारे बीच से एक बहुत बड़े आलिम आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी इस दुनिया को छोड़कर अपने मालिक की बारगाह में चले गए हैं।

आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी उन कुछ उलमा में से हैं जिन्होंने लगभग अपनी पूरी ज़िंदगी नौजवानों और जवानों को रास्ता दिखाने में लगा दी थी। आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी ने जवानों के लिए बड़ी आसान ज़बान में सेकडों किताबें लिखी थीं।

आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी सालों साल ईरान के मशहूर शहर कुम के इमामे जुमा भी रहे थे और यहाँ भी वह जुमे के अपने ख़ुतबों में जवानों के बारे में और जवानों से ही बात किया करते थे।

इस्लामी इंक़ेलाब से पहले भी आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी ने दूसरे उलमा के साथ-साथ इमाम ख़ुमैनी की लीडरशिप में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था।

आपकी पूरी ज़िंदगी बड़ी पाक-साफ़, पाकीज़ा, बेदाग़ और पूरी तरह से एक इस्लामी ज़िंदगी थी।

UNITY P.G. & LAW COLLEGE, LUCKNOW

Affiliated to University of Lucknow | Recognized Under Section 2(f) and 12 (B) of UGC Act.

ADMISSION OPEN

www.unitypgcollege.com | unitydegree@gmail.com

FOUNDER HON'BLE LATE JUSTICE MURTAZA HUSAIN
Ex- Lokayukt (U.P.)

FACILITIES

- Experienced Faculty
- Wi-fi Campus with Lush Green Cover
- Active Placement Cell
- Scholarship
- Free coaching for IAS, IPS, PCS(J), Bank PO & other Competitive Exams
- Fee Concession to meritorious students
- Moot Court, ET Room and Language Room
- Separate Hostel Facility for Boys and Girls
- Hygienic & well equipped cafeteria
- Transport facility
- Gymnasium

COURSES OFFERED

LL.B (Hons.) | LL.B (3 Years) | B.Com | M.Com
B.B.A | B.Ed. | D.El.Ed. (B.T.C) | B.A

WE ARE PROUD OF OUR STUDENTS

Tarif Mustafa Khan (U.P. PCS J) 2018

Anuj Sinha (U.P. PCS J) 2018

Kuwar Divyadarshi (U.P. PCS J) 2018

Nitinendra Singh (M.P. PCS J) 2018

Diksha Agarwal (U.P. PCS J) 2018

Shivam Singh (U.P. PCS J)

Urooj Fatima (U.P. PCS J)

Nidhi Solanki (U.P. PCS J)

Shivam Singh (Bihar & JK PCS J) 2019

Sector B, Basant Kunj, IIM By Pass Road, Lucknow-226101
Contact : 7570006104 | 7570006105 | 7570006113

RNI No: UPHIN/2012/43577 *Monthly Magazine*

मरयम

Vol:9 | Issue: 03 | MAY, 2020

इस महीने आप पढ़ेंगी...

जब आपका शौहर गुस्से में हो	7
रमज़ान, कुरआन और दुआ	8
हज़रत ख़दीजा[अ]	10
रोज़े से मोहब्बत	12
सब कुछ ख़ुदा की नज़र में है	14
कुरआन की तरफ़ लौटने में ही भलाई है	15
इमाम हसन[अ]: एक बहादुर इंसान	17
रोज़े के कुछ अहकाम	20
इमाम अली[अ] की ज़िंदगी से कुछ बातें	22
बच्चे और रमज़ानुल मुबारक के रोज़े	26
अल्लाह हर हिसाब से एक है	30
मेरे बन्दे मुझे पुकार!	33
ईद इनाम है तो है लेकिन...	34
जन्नत के महल की एक ईंट	36
शबे क़द्र के आमाल	38

Chief Editor
S. Mohd. Hasan Naqvi

Editorial Board
Nazar Abbas Rizvi
Mohd. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi
Imtiyaz Abbas Rizwan

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Mohammad Aqeel Zaidi

Distribution Manager
Baqir Hasan Zaidi

Contributors
Sajjad Haider Safavi
M. Husain Zaidi

Graphic Designer
Siraj Abidi
98390 99435
imagine graffix

Typist
S. Sufyan Ahmad

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामन्दी हो, यह ज़रूरी नही है। 'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कार्रवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले संपादक से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कॉन्टेन्ट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कार्रवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद हम किसी भी तरह की पूछताछ और कार्रवाई पर जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिये आने वाले कॉन्टेंट्स में ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprieter S. Mohammad Hasan Naqvi
printed at Swastika Prinwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and
published from 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003

MARYAM A/C: 55930 10102 41444 **Union Bank of India**
Tahseenganj Branch (Unity Branch) Lucknow **IFSC: UBIN0555932**

सब्क्रिप्शन के लिए चेक/ड्राफ़्ट पर सिर्फ़ **MARYAM** लिखिए।
चेक, ड्राफ़्ट और मनी आर्डर इस पते पर भेजिए:
Mohd. Hasan Naqvi, 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 99566 20017, email: maryammonthly@gmail.com

Head Office: Imambada Ghufranmab, Chowk Mandi, Lucknow
Registered Office: 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

या अलिय्यो, या अज़ीम

(माहे रमज़ान में हर वाजिब नमाज़ के बाद पढ़ी जाने वाली दुआ)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

يَا عَلِيُّ يَا عَظِيۡمُ يَا غَفُوۡرُ يَا رَحِيۡمُ اَنۡتَ الرَّبُّ الۡعَظِيۡمُ الَّذِىۡ لَيۡسَ كَمِثۡلِهٖ شَىۡءٌ وَهُوَ السَّمِيۡعُ الۡبَصِيۡرُ وَهٰذَا شَهۡرٌ عَظَّمۡتَهٗ وَكَرَّمۡتَهٗ وَشَرَّفۡتَهٗ وَفَضَّلۡتَهٗ عَلَى الشُّهُوۡرِ وَهُوَ الشَّهۡرُ الَّذِىۡ فَرَضۡتَ صِيَامَهٗ عَلَىَّ وَهُوَ شَهۡرُ رَمَضَانَ الَّذِىۡ اَنۡزَلۡتَ فِيۡهِ الۡقُرۡاٰنَ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الۡهُدٰى وَالۡفُرۡقَانِ وَجَعَلۡتَ فِيۡهِ لَيۡلَةَ الۡقَدۡرِ وَجَعَلۡتَهَا خَيۡرًا مِّنۡ اَلۡفِ شَهۡرٍ فَيَا ذَاالۡمَنِّ وَلَا يُمَنُّ عَلَيۡكَ مُنَّ عَلَىَّ بِفَكَاكِ رَقَبَتِىۡ مِنَ النَّارِ فِيۡمَنۡ تَمُنُّ عَلَيۡهِ وَاَدۡخِلۡنِىۡ الۡجَنَّةَ بِرَحۡمَتِكَ يَا اَرۡحَمَ الرَّاحِمِيۡنَ.

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

या अलिय्यु या अज़ीमु या ग़फ़ूरु या रहीमु अन्तर-रब्बुल अज़ीम, अल्लज़ी लै-स क-मिस्लिही शै, व हुवस्समीउल बसीरु व हाज़ा शह्रुन अज़्ज़म-तहू व कर-रम-तहू व शर-रफ़्तहू व फ़ज़्ज़ल्तहू अलश्शुहूर, व हुवश-शह्रुल्लज़ी फ़-रज़-त सियामहु अलैय्या, व हु-व शहरु रमज़ान अल्लज़ी अन्ज़ल्-त फ़ीहिल क़ुरआन हुदल लिन्नासि व बय्यिनातिम्मिनल हुदा वल फ़ुरक़ान, व ज-अल-त फ़ीही लै-लतल-क़द्र व ज-अ़ल-तहा ख़ैरम मिन अल्फ़ शह्र, फ़-या ज़ल-मन्नि वला युमन्नु अलै-क मुन्न अलैय्य बि-फ़काकि र-क़-बति मिनन्नारि फ़ीमन तमुन्नो अलैहि व अदख़िल्-निल-जन्-न-त बि-रहमति-क या अर-हमर-राहिमीन।

शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा रहमान व रहीम है।

ऐ बुज़ुर्ग व बरतर, ऐ बड़े बख़्शने वाले, बहुत मेहरबान। तू वह बुज़ुर्ग परवरदिगार है जिसके जैसा कोई नहीं और जो हर बात का सुनने वाला और हर चीज़ का देखने वाला है। यह वह महीना है जिसको तूने बुज़ुर्गी, करामत और शरफ़ व मंज़ेलत और दूसरे महीनों पर फ़ज़ीलत दी है। यह वह महीना है जिसके रोज़े तूने हम पर वाजिब किये हैं। यह ऐसा माहे रमज़ान है जिसमें तूने अपनी किताब क़ुरआन भेजी जो लोगों के लिए हिदायत है और इसमें हिदायत की खुली दलीलें और हक़ व बातिल में फ़र्क़ करने वाली निशानियाँ हैं। इसी महीने में तूने शबे क़द्र भी रखी है, यह वही रात है जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल व बेहतर है। इसलिए ऐ वह एहसान करने वाले जिस पर कोई दूसरा एहसान नहीं रख सकता, मुझे उन लोगों में शामिल कर ले जिन पर तूने एहसान किया है। जहन्नम की आग से आज़ाद करके एहसान कर और अपनी जन्नत में दाख़िल कर ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले!

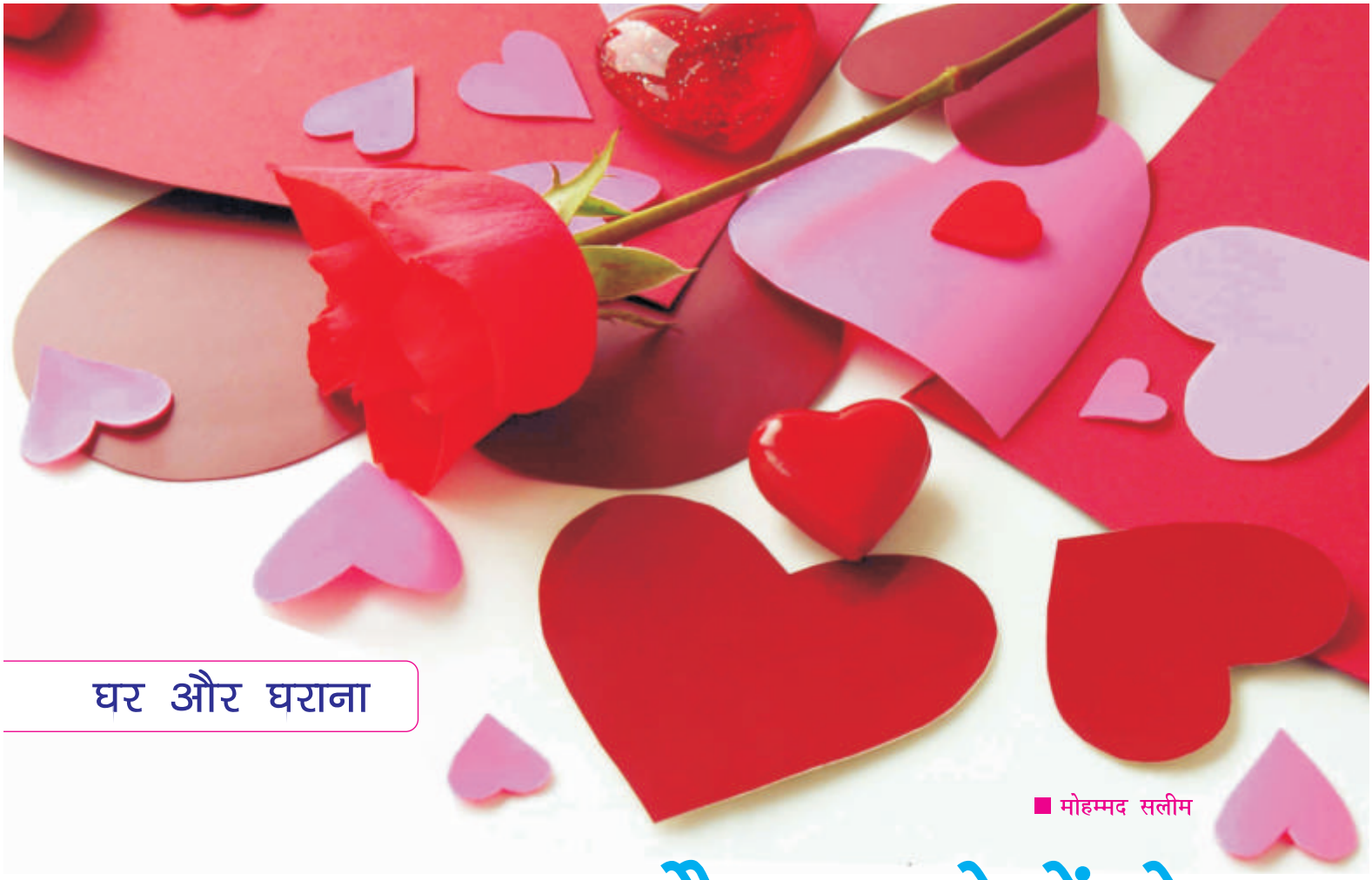

घर और घराना

■ मोहम्मद सलीम

जब आपका शौहर गुस्से में हो

किसी जगह एक बूढ़ी मगर समझदार औरत रहती थी। उसका शौहर उसे बहुत ही ज़्यादा चाहता था। दोनों में मोहब्बत इस हद तक थी कि उसका शौहर उसके लिए मोहब्बत भरी शायरी भी करता था और उसके लिए शेर कहा करता था। उम्र जितनी ज़्यादा होती जा रही थी, उतनी ही उनकी मोहब्बत भी बढ़ती जा रही थी।

किसी ने उस औरत से उन दोनों की मोहब्बत और ख़ुशियों भरी ज़िन्दगी का राज़ पूछा कि:-

क्या आप एक बहुत अच्छी कुक हैं? बहुत अच्छा खाना बना लेती हैं?

या अपने शौहर की निगाहों में आप बहुत ही ज़्यादा ख़ूबसूरत हैं?

या उन्हें सबसे ज़्यादा चाहती हैं?

या इस मोहब्बत का कोई और राज़ है?

तो औरत ने यूँ जवाब दिया कि:-

ख़ुशियों भरी ज़िन्दगी का राज़ ख़ुदा के बाद ख़ुद औरत के अपने हाथों में होता है। अगर औरत चाहे तो वह अपने घर में जन्नत का एक कमरा भी बना सकती है और अगर यही औरत चाहे तो अपने घर को जहन्नम की भड़कती हुई आग से भी भर सकती है।

यह कभी मत सोचिएगा कि माल और दौलत की वजह से ख़ुशियाँ नसीब होती हैं। हिस्ट्री न जाने पैसों वाली कितनी औरतों की कहानियों से भरी पड़ी है जिनके शौहर उनको उनके माल-दौलत के साथ छोड़ कर उनसे अलग हो गये। अगर दौलत ख़ुशियाँ ला सकती होती तो उनकी ज़िन्दगी में भी ख़ुशियाँ ही ख़ुशियाँ होतीं। न ही ज़्यादा बच्चों की माँ होना कोई कमाल है। कई औरतों के दस-दस बच्चे थे लेकिन उनके शौहरों ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया और न ही वह अपने शौहरों की कोई ख़ास मोहब्बत पा सकीं बल्कि तलाक़ तक नौबत जा पहुँची।

अच्छे-अच्छे खाने पकाना भी मोहब्बत पाने का असली सोर्स नहीं है। सारा दिन किचन में रह कर मज़े-मज़े के खाने पका कर भी औरतें अपने शौहरों की शिकायत करती नज़र आती हैं और शौहर की नज़र में अपनी कोई इज़्ज़त नहीं बना पातीं।

तो फिर आप ही बता दीजिए कि इस कामयाब और ख़ुशियों भरी ज़िन्दगी का क्या राज़ है? आप अपने और शौहर के साथ होने वाले लड़ाई-झगड़ों और मुश्किलों से कैसे निमटा करती थीं?

उस औरत ने जवाब दिया: जिस वक़्त मेरे शौहर को गुस्सा आता था और इसमें भी कोई शक नहीं है कि मेरा शौहर बहुत ही गुस्से वाला आदमी था, उस वक़्त मैं बड़ी ही रिस्पेक्ट के साथ पूरी तरह से चुप हो जाया करती थी। यहाँ एक बात यह भी बता दूँ कि रिस्पेक्ट के साथ चुप होने का यह मतलब है कि आँखों से नफ़रत न झलक रही हो और न ही सामने वाले को यह लग रहा हो कि ख़ामोशी से मेरा मज़ाक़ उड़ाया

जा रहा है।

आदमी बहुत समझदार होता है, ऐसी सिचुवेशन और ऐसे मामले को फ़ौरन ही भाँप लिया करता है।

अच्छा तो आप ऐसी सिचुवेशन में कमरे से बाहर क्यों नहीं चली जाया करती थीं ?

यह कोई इलाज नहीं है और ख़बरदार! ऐसा कभी करना भी मत। इस से तो ऐसा लगेगा कि तुम उस से भागना चाहती हो और उसकी बात नहीं सुनना चाहती, ख़ामोशी तो ज़रूरी है ही, इसके साथ-साथ शौहर जो कुछ कहे उसे न सिर्फ़ यह कि सुनना बल्कि उसके कहे से इत्तिफ़ाक़ (एग्री) करना भी उतना ही ज़रूरी है।

मेरा शौहर जब अपनी बातें पूरी कर लेता था तो मैं कमरे से बाहर चली जाया करती थी क्योंकि इस सारे हंगामे और गुस्से वाली बातों के बाद मैं समझती थी कि उसे अब आराम की ज़रूरत है। कमरे से बाहर निकल कर मैं अपने रोज़ाना के घर के काम-काज में लग जाया करती थी। बच्चों के काम करती थी, खाना पकाने और कपड़े धोने में वक़्त बिताती थी और अपने दिमाग़ को उस जंग से दूर भगाने की कोशिश करती थी जो मेरा शौहर मेरे साथ करता था।

तो आप उसके बाद क्या करती थीं ? जैसे कई दिनों के लिए रूठ जाना, शौहर से हफ़्ता दस दिन के लिए बोल-चाल छोड़ देना और उसकी कोई बात न सुनना या उसे इगनोर करना वग़ैरा... ?

नहीं! बिल्कुल नहीं! बोल-चाल छोड़ देने की आदत बहुत बुरी चीज़ है। शौहर के साथ अपने रिश्ते को बिगाड़ना दोधारी तलवार की तरह है। अगर तुम अपने शौहर से बोलना छोड़ देती हो तो हो सकता है कि शुरु-शुरु में उसके लिए यह बहुत ही परेशानी की बात हो। शुरु में वह तुम से बोलना चाहेगा और बोलने की कोशिश भी करेगा लेकिन जिस तरह दिन गुज़रते जाएंगे उसके लिए सब कुछ नार्मल होता चला जाएगा। तुम एक हफ़्ते के लिए बोलना छोड़ोगी तो उसमें तुम से दो हफ़्तों तक न बोलने की ताक़त आ जाएगी और हो सकता है कि तुम्हारे बग़ैर रहना भी सीख ले। शौहर को ऐसी आदत डाल दो कि तुम्हारे बग़ैर अपना दम भी घुटता हुआ लगे यानी तुम उसके लिए ऑक्सीजन की तरह बन जाओ जिसकी उसे हर पल ज़रूरत हो। उसके लिए ऐसा पानी बन जाओ कि जिसके बग़ैर वह ज़िन्दा ही न रह सकता हो। अगर हवा बनना है तो ठण्डी और नर्म हवा बनो, धूल-मिट्टी वाली और तेज़ आँधी वाली नहीं।

तो फिर आप क्या-क्या करती थीं ?

मैं दो-तीन घंटों के बाद जूस का एक गिलास या फिर गर्म चाय का एक कप बनाकर उसके पास पहुँच जाती थी और उससे बड़े ही सलीक़े से कहती थी कि लीजिए! चाय पी लीजिए। मुझे पता होता था कि उस वक़्त उस चाय या जूस की उसे ज़रूरत होती थी। मेरा यह काम और अपने शौहर के साथ बातचीत इस तरह होती थी कि जैसे हमारे बीच कोई गुस्से या लड़ाई वाली बात हुई ही नहीं। इसके बाद मेरा शौहर ही मुझ से बार-बार पूछता था कि क्या मैं उस से नाराज़ तो नहीं हूँ। जबकि मेरा हर बार उस से यही जवाब होता था कि नहीं! मैं तो बिल्कुल नाराज़ नहीं हूँ। इसके बाद वह हमेशा अपने गुस्से और ग़लत बिहेवियर के लिए माफ़ी माँगा करता था और मुझ से घंटों मीठी-मीठी बातें करता था।

तो क्या आप उसकी उन मीठी-मीठी बातों पर यक़ीन कर लेती थीं ?

हाँ! बिल्कुल! मैं उन बातों पर बिल्कुल यक़ीन करती थी। मैं जाहिल तो नहीं हूँ। क्या तुम यह कहना चाहती हो कि मैं अपने शौहर की उन बातों पर तो यक़ीन कर लूँ जो वह मुझ से गुस्से में कह डालता था और उन बातों पर यक़ीन न करूँ जो वह मुझ से सुकून की हालत में करता था ?

तो फिर आपकी सेल्फ़ रेस्पेक्ट कहाँ गई ?

सेल्फ़ रेस्पेक्ट! कौन सी सेल्फ़ रेस्पेक्ट ? क्या सेल्फ़ रेस्पेक्ट इसी का नाम है कि आप गुस्से में आए हुए एक आदमी की कड़वी बातों पर तो यक़ीन करके उसे अपनी सेल्फ़ रेस्पेक्ट का मामला बना ले लेकिन उसकी उन बातों को कोई अहमियत न दें जो वह आपको अच्छे माहौल में और सुकून के साथ कह रहा है! जबकि यह भी मालूम है कि गुस्से में इन्सान की अक़्ल काम नहीं करती और गुस्से की हालत में इन्सान बहुत सी बातें नहीं कहना चाहता लेकिन कह जाता है। इसलिए मैं फ़ौरन ही गुस्से की हालत में कही हुई उन कड़वी बातों को भुला कर उनकी मोहब्बत भरी और काम की बातों को ग़ौर से सुनती थी। ●

■ नसीम हैदर ज़ैदी

रमज़ान, क़ुरआन और दुआ

रमज़ान, क़ुरआन और दुआ; इन तीनों का आपस में एक गहरा रिश्ता है। क़ुरआन अल्लाह की किताब है, रमज़ानुल मुबारक अल्लाह का महीना है और दुआ अल्लाह के साथ बातें करने का सबसे अच्छा रास्ता है।

इन तीनों का आपसी रिश्ता यह है कि क़ुरआन रमज़ान में नाज़िल हुआ है। इसे रमज़ान की बहार कहा जाता है और रमज़ान में क़ुरआन की तिलावत ख़ासतौर पर की जाती है और जिन लोगों के अन्दर शौक़ होता है वह अल्लाह की इस किताब में सोच-विचार व ग़ौर भी करते हैं।

इसी रमज़ान को दुआओं का महीना भी कहा जाता है, इसी लिए इसमें आपको हर दिन पढ़ी जाने वाली तरह-तरह की दुआएं, हर दिन की अलग दुआ, हर रात की अलग दुआ, सहरी की अलग दुआएं मिलेंगी और इसके अलावा छोटी-बड़ी दूसरी ख़ास दुआएं भी हैं जो इस महीने में पढ़ी जाती हैं जैसे दुआए अबू हमज़ा सुमाली, दुआए इफ़्तिताह, दुआए मकारिमुल अख़्लाक़ वग़ैरा।

क़ुरआन मजीद ने इन्सान की परवरिश के लिए जहाँ बहुत सारे तरीक़े अपनाए हैं वहीं एक तरीक़ा दुआ का भी है ताकि इन्सान दुआ का सलीक़ा भी सीखे और यह भी जान ले कि बड़े इन्सानों की दुआएं क्या होना चाहिएं।

इसी तरह दुआ के ज़रिये बहुत सी वह बातें भी सिखाई हैं जो शायद किसी दूसरे तरीक़े से इन्सान के दिल और दिमाग़ तक न पहुँच पातीं। पेश हैं क़ुरआन करीम की कुछ दुआएं और उन से हमें मिलने वाले कुछ ख़ास मैसेज...

(1) दुनिया और आख़िरत में कामयाबी की दुआ

''ऐ पालने वाले! हमें दुनिया में भी नेकी अता फ़रमा और आख़िरत में भी और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचाए रख।''

(सूरए बक़रा/201)

मैसेज

कुछ लोग ख़ुदा से बस दुनिया की कामयाबी चाहते हैं लेकिन मोमिन ख़ुदा से दुनिया और आख़िरत दोनों की कामयाबी चाहता है। दीन का मक़सद भी यही है कि लोगों को दुनिया और आख़िरत दोनों की कामयाबी तक पहुँचाया जाए।

हमें जो तकलीफ़ भी पहुँचती है वह हमारे अपने कामों का नतीजा होती है, लेकिन ख़ुदा हमें अपनी पनाह में लेकर उस तकलीफ़ को आसानी में बदल देता है।

(2) अपने बच्चों, माँ-बाप और मोमिनीन के लिए दुआ

''ऐ मेरे पालने वाले! मुझे और मेरी नस्ल को नमाज़ क़ायम करने वाला बना दे और मेरी दुआ को क़ुबूल कर ले। ऐ ख़ुदा! मुझे और मेरे माँ-बाप को और तमाम मोमिनों को उस दिन माफ़ कर देना जिस दिन अज़ाब होगा।''

(सूरए इब्राहीम/40-41)

मैसेज

नमाज़ दीन की पहचान है। नमाज़ के क़ायम करने का मक़सद यह है कि हम अपनी और समाज की ज़िन्दगी को ख़ुदा की हिदायत के ज़रिये कामयाब बनाएं।

जब दुआ करें तो सबके लिए दुआ करें जैसा कि जनाबे इब्राहीम[अ०] ने अपने बाल-बच्चों, अपने माँ-बाप और सभी मोमिनों के लिए दुआ की थी। दुआ करने वाले के लिए ज़रूरी है कि वह तौहीद और क़यामत पर पूरा यक़ीन रखता हो।

(3) डटे रहने के लिए दुआ

''ऐ हमारे पालने वाले! जब तूने हमें हिदायत दे दी है तो अब हमारे दिलों में गुमराही न पैदा होने पाए और हमें अपने पास से रहमत अता फ़रमा कि तू बेहतरीन अता करने वाला है।'' (सूरए आले इमरान/8)

मैसेज

हिदायत पाना एक बुनियादी चीज़ है लेकिन इस से ज़्यादा बड़ी बात जो हिदायत मिली है उस पर बाक़ी रहना है। जिस तरह शुरु की हिदायत ख़ुदा की रहमत है बिल्कुल उसी तरह हिदायत पर बाक़ी रहना भी उसकी ही रहमत है।

हम अपने जिस्म को सेहतमंद रखने के लिए लगातार साँस लेते हैं, इसी तरह अगर हम अपनी रूह को ठीक रखना चाहते हैं तो इस के लिए हमें लगातार ख़ुदा से जुड़े रहना होगा ताकि रूह रास्ते से भटकने न पाए।

(4) तौबा के लिए दुआ

''ऐ परवरदिगार! हम दोनों को अपना मुसलमान और फ़रमाँबरदार क़रार दे और हमारी औलाद में भी एक फ़रमाँबरदार उम्मत

पैदा कर, हमें हमारे मनासिक दिखला दे और हमारी तौबा क़ुबूल फ़रमा कि तू बेहतरीन तौबा क़ुबूल करने वाला और मेहरबान है।''

(सूरए बक़रा/128)

(5) मोमिनों की मग़फ़िरत के लिए दुआ

''ऐ ख़ुदा! हमें माफ़ कर दे और हमारे उन भाईयों को भी जो हम से पहले ईमान लाए हैं, और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए किसी तरह का कीना (दुश्मनी) न पैदा हो जाए। तू बड़ा ही मेहरबान और रहम करने वाला है।'' (सूरए हश्र/10)

मैसेज

कुछ लोग दुनिया के माल-दौलत को पाने की हौड़ में लगे रहते हैं और हमेशा यह चाहते हैं कि बस वही सबसे ज़्यादा पैसे वाले बन जाएं लेकिन मोमिनीन ऐसे नहीं होते बल्कि वह ईमान वालों से मोहब्बत करते हैं और उन के ही रास्ते पर चलते हुए उनके लिए रहमत और मग़फ़िरत की दुआ करते हैं।

(6) दुश्मनों पर कामयाबी के लिए दुआ

''ऐ ख़ुदा! हम पर वैसा बोझ न डालना जैसा पहले वाली उम्मतों पर डाला गया है, हम पर वह बोझ न डालना जिसकी हम में ताक़त न हो, हमें माफ़ कर देना, हमारी मग़फ़िरत फ़रमा देना, हम पर रहम करना, तू हमारा मौला और मालिक है और कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ हमारी मदद फ़रमा।'' (सूरए बक़रा/286)

मैसेज

दुआ के आदाब में से एक यह है कि सबसे पहले ख़ुदा के सामने अपनी कमज़ोरी को माना जाए। इसके बाद ख़ुदा की अज़मत की गवाही दी जाए और फिर दुआ की जाए।

मोमिनीन हमेशा यह चाहते हैं कि इस्लाम कुफ़्र पर कामयाबी हासिल करे।

(7) मुत्तक़ियों और परहेज़गारों का इमाम होने की दुआ

''ऐ ख़ुदा! हमारी बीवियों और हमारी औलाद को हमारी आँखों की ठंडक बना और हमें मुत्तक़ी लोगों का इमाम बना दे।''

(सूरए फ़ुरक़ान/78)

मैसेज

अच्छी बीवी और नेक बच्चे इन्सान की दुनिया व आख़िरत बनाने में बहुत बड़ा रोल निभा सकते हैं। अच्छी औलाद जन्नत का एक फूल है।

मोमिन वह लोग हैं जो ख़ुद तो तक़्वा हासिल करते ही हैं मगर साथ ही साथ उन के अंदर इतनी बड़ी हिम्मत होती है विह अच्छे और मुत्तक़ी लोगों के इमाम (लीडर) बनने की दुआ भी करते हैं।

(8) सब्र और इस्लाम पर बाक़ी रहने की दुआ

''ख़ुदाया हमें सब्र अता फ़रमा और हमें इस हाल में दुनिया से उठाना कि हम मुसलमान हों।'' (सूरए आराफ़/80)

मैसेज

जिनके अन्दर ईमान होता है वह लोग ख़ुदा के दुश्मनों के मुक़ाबले में डटे रहने की दुआ करते हैं। ऐसे लोगों को ख़ुदा और इस्लाम के दुश्मनों से कोई डर नहीं होता।

मोमिन के लिए सबसे बड़ी बात यह है कि उसकी ज़िन्दगी का अंजाम अच्छा होना चाहिए। इसलिए मुसलमान होना इतना अहम नहीं है जितना मुसलमान रहते हुए मरना है।

(9) ज़ालिमों से दूरी के लिए दुआ

''ख़ुदाया! हमें ज़ालिमों के साथ शामिल न करना।'' (सूरए आराफ़/47)

मैसेज

ज़ुल्म को बुरा समझना और उस से दूरी का एलान करना हर मोमिन की ज़िम्मेदारी है। ज़ालिम से दूरी बनाए रखने का जज़्बा ही इन्सान को उस से मुक़ाबला करने की ताक़त देता है, इसलिए ख़ुदा से हमेशा यह जज़्बा माँगते रहना चाहिए।

(10) दिल के बड़ा होने और कामों में आसानी के लिए दुआ

''मेरे रब! मेरे सीने को चौड़ा कर दे, मेरे काम को आसान कर दे और मेरी ज़बान की गिरह को खोल दे।'' (सूरए ताहा/25-28)

मैसेज

जब जनाबे मूसा[अ०] फ़िरऔन को ख़ुदा का मैसेज देने के लिए जाने लगे तो उन्होंने अल्लाह से यही दुआ मांगी थी।

इस आयत का मैसेज यह है कि फ़िरऔन जैसे लोगों से मुक़ाबले के लिए हिम्मत और पक्का इरादा होना चाहिए। पैग़म्बरों और उनके रास्ते पर चलने वालों के इरादे पक्के होते हैं और वह अपने मिशन पर डटे रहते हैं। हमें भी ख़ुदा से यह दुआ करना चाहिए कि वह हमें भी ऐसा ही बना दे ताकि हम भी नबियों के बताए हुए रास्ते पर चल कर दीनदार बन सकें।

(11) शुक्र की तौफ़ीक़ के लिए दुआ

''मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी इस नेमत का शुक्रिया अदा कर सकूँ जो तूने मुझे और मेरे माँ-बाप को दी है और ऐसा नेक अमल करूँ कि तू राज़ी हो जाए और मेरी नस्ल को भी नेक बना दे।''

(सूरए अहक़ाफ़/15)

मैसेज

नेमत की पहचान रखना और उस पर शुक्र करना मोमिन के लिए बहुत ज़रूरी है जिसके लिए उसे ख़ुदा से दुआ करना चाहिए।

ख़ुदा की नेमतों पर शुक्र यह है कि हम हर काम ख़ुदा की मर्ज़ी के हिसाब से करें।

माँ-बाप ने हमारे लिए जो कुछ किया है उसे हम भूल न जाएं और उनके लिए दुआ करते रहें।

अच्छी औलाद ख़ुदा की एक नेमत है जिसके लिए हमें उस से दुआ करना चाहिए।

(12) नेक लोगों में शामिल होने की दुआ

''ख़ुदाया मुझे इल्म और हिकमत दे दे और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला दे।''

(सूरए शुअरा/83)

मैसेज

क़ीमत उस इल्म की है जो इन्सान को अच्छे लोगों में मिला दे, वरना वह इल्म जो इन्सान को सही रास्ते और अच्छे लोगों से दूर कर दे वह इल्म किसी काम का नहीं होता।

हज़रत ख़दीजा अ०

जिन्हें अल्लाह के रसूल स० बहुत याद किया करते थे

■ अब्दुल्लाह अली बख़्शी

यूँ तो अल्लाह के रसूल स० की कई बीवियाँ थीं, लेकिन उनमें से सिर्फ़ हज़रत ख़दीजा स० को ही आप स० ने अपनी सबसे अच्छी बीवी के तौर पर और दुनिया की चार ख़ास औरतों में से पहचनवाया है। यह दर्जा व मुक़ाम अल्लाह के रसूल स० की दूसरी बीवियों में से किसी को भी नहीं मिला है।

हज़रत ख़दीजा स० की अच्छाईयों को अल्लाह के रसूल स० ने कई तरीक़ों से कई हदीसों में बताया है।

सवाल यह है कि अल्लाह के रसूल स० ने हज़रत ख़दीजा स० को अपनी सारी बीवियों में सबसे अच्छा क्यों बताया और उन्हें दुनिया की चार बड़ी औरतों में एक क्यों कहा ?

शायद इसकी वजह आगे चलकर मुसलमानों के बीच होने वाले फ़ितने और वाक़िए हों जिन पर अल्लाह के रसूल स० की नज़र पहले से ही थी। इसलिए अल्लाह के रसूल स० ने हज़रत ख़दीजा स० और उनकी बेटी हज़रत फ़ातिमा स० को मुसलमानों और ख़ास कर औरतों के लिए दो ऐसे आइडियल्स के तौर पर पेश किया है जिन्हें देखकर आसानी से यह फ़ैसला किया जा सकता है कि हक़ किस के साथ है।

अल्लाह के रसूल स० ने दुनिया की सबसे अफ़ज़ल और सबसे अच्छी औरतों के तौर पर चार औरतों के नाम लिये थे, जिनमें दो औरतों का ताल्लुक़ इस्लाम और मुसलमानों से है और दो का ताल्लुक़ पिछले नबियों की उम्मतों से।

पहली हदीस

अल्लाह के रसूल स० ने फ़रमाया है, ''दुनिया की बेहतरीन औरतें ख़दीजा स० और मरयम बिन्ते इमरान हैं।''

इस हदीस में रसूले अकमर स० ने सिर्फ़ दो औरतों को दुनिया की बेहतरीन औरतों के नाम से पहचनवाया है, जिनमें से मुसलमानों में से हज़रत ख़दीजा स० और ईसाईयों में से हज़रत मरयम स० हैं।

दूसरी हदीस

रसूले ख़ुदा स० ने फ़रमाया है, ''ख़दीजा ने मेरी उम्मत की औरतों पर उसी तरह फ़ज़ीलत पाई है, जिस तरह मरयम ने दुनिया की दूसरी सारी औरतों पर फ़ज़ीलत पाई है।

तीसरी हदीस

एक बार अल्लाह के रसूल स० ने ज़मीन पर चार लाइनें खींच कर पूछा कि क्या तुम लोग जानते हो कि यह लाइनें कैसी हैं ? जवाब दिया गया कि ख़ुदा और उसके रसूल स० ही बेहतर जानते हैं।

अल्लाह के रसूल स० ने फ़रमाया, ''जन्नत की बेहतरीन औरतें ख़दीजा, फ़ातिमा, आसिया (फ़िरऔन की बीवी) और मरयम हैं।''

अल्लाह के रसूल स० ने इस हदीस के मुताबिक़ लाइनें खींच कर दुनिया और आख़िरत में दुनिया की चार बेमिसाल

औरतों के नाम लेकर उनके बारे में बता दिया है। इस हदीस से पता चलता है कि यह जन्नत में भी इन चारों औरतों का दर्जा सबसे बड़ा होगा और क़यामत तक इन से बढ़ कर कोई औरत पैदा नहीं होगी।

चौथी हदीस

अल्लाह के रसूल[स०] ने इस हदीस में उन औरतों के बारे में बताया है जो दुनिया की औरतों की सरदार हैं। अल्लाह के रसूल[स०] फ़रमाते हैंः चार औरतें दुनिया की औरतों की सरदार हैंः मरयम, आसिया, ख़दीजा और फ़ातिमा बिन्ते मोहम्मद[स०] और इन में से सारी दुनिया में बेहतरीन फ़ातिमा[स०] हैं।''

पाँचवीं हदीस

एक दिन रसूले ख़ुदा[स०] ने मस्जिद में इमाम हसन[अ०] और इमाम हुसैन[अ०] की फ़ज़ीलत बयान करते हुए फ़रमायाः

''ऐ लोगो! क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि नाना और नानी के लिहाज़ से कौन बेहतरीन इन्सान हैं ?

वहाँ मौजूद लोगों ने कहाः जी हाँ! या रसूलुल्लाह हमें बताईये।

अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमायाः वह हसन[अ०] और हुसैन[अ०] हैं जिनके नाना अल्लाह के रसूल[स०] और जिनकी नानी ख़दीजा हैं।''

हज़रत ख़दीजा[स०] ने हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा[स०] के साथ अपनी ज़िन्दगी के 25 साल बिताए थे और इस बीच बहुत सी बातें अपनी आँखों से देखे थीं। आयतें और हदीसें अपने कानों से सुनी थीं। इस पूरे पीरियड में अल्लाह के रसूल[स०] से बहुत सी नसीहतें और बातें भी सुनी थीं। सहाबियों के साथ अल्लाह के रसूल[स०] की बहुत सी बातें, फ़ैसले और मुलाक़ातें हज़रत ख़दीजा[स०] के ही घर में हुआ करती थीं और आपको उनकी बातचीत और फ़ैसलों के बारे में काफ़ी कुछ पता होता था। इस पूरे पीरियड में हज़रत ख़दीजा ने घर के अंदर और घर से बाहर के वाक़िओं के बारे में रसूल ख़ुदा[स०] से हज़ारों बातें और हदीसें सुनी थीं जिसकी वजह से हज़रत ख़दीजा से जुड़ी बहुत सी यादें अल्लाह के रसूल[स०] के दिल व दिमाग़ में बसी हुई थीं।

हज़रत ख़दीजा[स०] ने दूसरी बीवियों से ज़्यादा अल्लाह के रसूल[स०] के साथ वक़्त बिताया था। रसूले ख़ुदा[स०] को भी उन पर सबसे ज़्यादा भरोसा था लेकिन अफ़सोस है कि इन सब क्वालिटीज़ के बाद भी रसूले ख़ुदा[स०] की सबसे ज़्यादा भरोसेमन्द बीवी यानी हज़रत ख़दीजा की ज़बानी किताबों में बहुत कम हदीसें लिखी गई हैं। ●

HK

KAZIM
Zari Art

All kinds of
Sarees, Suits, Lehnga
& Designer Wedding Gown

Work shop
Ahata Dhannu Beg, kazmain Road
Sa'adat ganj, Lucknow

Showroom
1st floor, Doctor Gopal Pathak Building
latouch road, Hevett road Lucknow

Contact No.
+91-9795907202, 9839126005

■ जवाद हुसैनी

रोज़े से मोहब्बत

रमज़ानुल मुबारक का महीना इबादत, बन्दगी और रूह की परवरिश का महीना है। यह वह मुबारक महीना है जिसमें इन्सान ख़ुदा से बहुत क़रीब हो सकता है। इस महीने का सबसे ख़ास अमल रोज़ा है।

मुसलमान ख़ुदा की इबादत और उसकी बन्दगी करने के लिए इस पूरे महीने में रोज़े रखते हैं। लेकिन कुछ लोग इस काम को ज़िन्दगी में इतनी बड़ी जगह दे देते हैं कि न सिर्फ़ रमज़ान के मुबारक महीने में बल्कि आम दिनों में भी रोज़े से फ़ायदा उठाते हैं। इसलिए उन्हें ख़ुदा की तरफ़ से इनाम भी कुछ ख़ास ही मिलता है।

आइए! पढ़ते हैं कुछ रोज़ेदारों की कहानी और उनकी ज़िन्दगी के ख़ास पल।

हज़रत हमज़ा

उहद की जंग के बारे में बात हो रही थी कि जंग शहर से बाहर लड़ी जाए या शहर के अन्दर रह कर? फ़ौज के कमाण्डर हज़रत हमज़ा थे। जब आपसे पूछा गया तो आपने कहा कि उस ख़ुदा की क़सम जिसने हमारे लिए क़ुरआन जैसी किताब भेजी है, मैं उस वक़्त तक कुछ नहीं खाऊँगा जब तक शहर के बाहर जाकर दुश्मनों से जंग न करूँ। आपने जंगे उहद में दो दिन तक रोज़ा रखा था और रोज़े की हालत ही में शहीद हुए थे।

हज़रत जाफ़रे तय्यार

मोतः की जंग रसूले इस्लाम[स०] के ज़माने में लड़ी जाने वाली एक बड़ी जंग है जिसमें इस्लाम के लश्कर में तीन हज़ार सिपाही थे और दुश्मन की फ़ौज में 30 से 40 हज़ार। जनाबे जाफ़रे तय्यार इस जंग में इस्लामी कमाण्डर थे। आप जब लड़ने गये तो अपने घोड़े से उतर गए और घोड़े पर सवार हुए बिना ही लड़ना शुरु किया। जनाबे जाफ़रे तय्यार के दोनों बाज़ू काट दिये गये थे और जिस्म पर सत्तर तीर मारे गये थे। ज़ख़्मों से चूर होकर ज़मीन पर गिर पड़े तो उन्हें उठाकर एक टेंट में ले जाया गया।

अब्दुल्लाह इब्ने उमर कहते हैंः जो लोग उन्हें उठाकर टेंट में ले गये थे उन में से एक मैं भी था। मैंने देखा कि जाफ़रे तय्यार में बिल्कुल जान नहीं थी और प्यास से उनके होंठ सूख चुके थे। मैं एक बर्तन में पानी लाया और उनका कन्धा हिलाया। उन्होंने बड़ी मुश्किल से आँखें खोलीं और बोलेः क्या कह रहे हो? मैंने कहाः पानी लाया हूँ, थोड़ा पी लीजिए। बोले कि इसे यहीं रख दो। अगर ज़िन्दा बच गया तो मग़रिब के वक़्त पी लूँगा और अगर न बच सका तो इसी तरह अपने अल्लाह से मुलाक़ात करूँगा। मैंने पूछा कि मग़रिब तक क्यों? बोले कि मैं रोज़े से हूँ, वक़्त से पहले इफ़्तार नहीं करना चाहता।

अमीर मुख़्तार

कहा जाता है कि जब मुख़्तारे सक़फ़ी ने इमाम हुसैन[अ०] के क़ातिलों से बदला लेना शुरु किया और उन से जंग की तो जंग एक दिन सुबह की नमाज़ के बाद शुरु हुई। नमाज़ जमाअत से पढ़ी गई थी।

उस दिन इराक़ में बहुत ज़्यादा गर्मी थी और सिपाहियों के जिस्म से एक तरफ़ गर्मी की वजह से पसीना बह रहा था तो दूसरी तरफ़ उनके ज़ख़्मों से ख़ून भी रिस रहा था जिसकी वजह से उन्हें बहुत सख़्त प्यास लग रही थी। कुछ देर के लिए जब जंग रुकी तो अमीर मुख़्तार ने सारे ज़ख़्मियों को पानी पिलाने का हुक्म दिया लेकिन ख़ुद पानी नहीं पिया क्योंकि रोज़े से थे। इस जंग में भी कूफ़े वालों ने एक बार फिर से बेवफ़ाई दिखाई और अमीर मुख़्तार को अकेला छोड़ दिया। 67 साल की उम्र में अमीर मुख़्तार रोज़े की ही हालत में शहीद हुए।

हज़रत नफ़ीसा

इमाम हसन[अ०] के पोते हसन इब्ने ज़ैद की बेटी का नाम नफ़ीसा था जो इमाम सादिक़[अ०] के बेटे इस्हाक़ मुअ्तमिन की बीवी थीं। इनके बारे में लिखा गया हैः ''वह बड़ी

फ़ज़ीलतों वाली औरत थीं और इनके बारे में बहुत सी हदीसें बयान हुई हैं।'' मुहद्दिसे क़ुम्मी लिखते हैंः इस बीबी ने अपनी क़ब्र ज़िन्दगी में अपने ही हाथों से बनाई थी, जिसमें वह नमाज़ पढ़ा करती थीं और क़ुरआन की तिलावत किया करती थीं। यहाँ तक कहा जाता है कि इस क़ब्र में उन्होंने छः हज़ार बार क़ुरआन मजीद ख़त्म किया था। आपकी वफ़ात रमज़ानुल मुबारक में हुई थी। जब उनका आख़िरी वक़्त आया तो उस वक़्त भी वह रोज़े से ही थीं। काफ़ी कमज़ोर हो गई थीं इसलिए उन से कहा गया कि कुछ खा-पी लीजिए। उन्होंने कहा कि मैं तीस साल से यही दुआ और कोशिश कर रही हूँ कि अपने ख़ुदा से रोज़े की हालत में मुलाक़त करूँ, फिर इस वक़्त खाने-पीने का तो कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। अब मेरी दुआ के क़ुबूल होने का वक़्त आ चुका है। इसके बाद आपने क़ुरआन खोला और सूरए अनआम की तिलावत करने लगीं। जब इस आयत ''लहुम दारुस-सलामि इन-द रब्बिहिम'', ''ख़ुदा के यहाँ उनके लिए सलामती और अमन का घर (जन्नत) है'' पर पहुँचीं तो उनकी रूह बदन से निकल गई।

उनकी वफ़ात के बाद उनके शौहर इस्हाक़ ने उनका जनाज़ा मिस्र से मदीने ले जाने का फ़ैसला किया ताकि उन्हें मदीने में बक़ीअ् के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करें लेकिन मिस्र के लोगों ने कहा कि इन्हें मिस्र ही में दफ़्न कर दीजिए ताकि इनकी वजह से हमारे ऊपर बरकतें यूँ ही नाज़िल होती रहें। लेकिन उन्होंने लोगों की बात नहीं मानी मगर रात में उन्होंने रसूले इस्लाम[स०] को ख़्वाब में देखा जो कह रहे थेः ''बेटा! मिस्र वालों की बात मान लो और उनकी बात मत ठुकराओ ताकि इस बीबी की बरकत से अल्लाह की रहमत उन पर उतरती रहे।''

क़ुरआन और इन्सान

क़ुरआन
ख़ुदा के फ़ज़्लो करम का दस्तरख़ान है।

क़ुरआन में इन्सानी कमाल और हुयमेन वेल्युज़ के सारे नुस्ख़े पाये जाते हैं। यह किताब माहे रमज़ान में नाज़िल हुई थी यानी इस दस्तरख़ान को माहे रमज़ान में बिछाया गया था ताकि मेहमानों की मेज़बानी के लिए दावत का सामान चुन-चुनकर लगा दिया जाये। साथ ही जिस रात में क़ुरआन उतरा था उसी रात में यानी शबे क़द्र में सारे इन्सानों के बारे में साल भर के फ़ैसले भी होते हैं और इसी रात में इस दुनिया में पाई जाने वाली हर चीज़ की तक़दीर भी लिखी जाती है। इसलिए इस रात में इन्सान के पास यह सुनहरा मौक़ा होता है कि वह अपने हाथों से अपनी तक़दीर लिख ले और जो कुछ चाहता है ख़ुदा के दस्तरख़ान से उठा ले।

महबूब की चौखट पर

मेज़बान और मेहमान में सबसे अच्छा रिश्ता मोहब्बत का रिश्ता होता है। ऐसी मेहमानी और मेज़बानी के सबसे ख़ूबसूरत पल वह होते हैं जब आशिक़ व माशूक़ की एक दूसरे के साथ मुलाक़ात होती है। इश्क़ की मुलाक़ात में असली ख़्वाहिश ख़ुद माशूक़ होता है यानी जिससे मोहब्बत की जाती है, न कि उसकी दी हुई नेमतें। इस मुलाक़ात में चाहने वाले और महबूब की सबसे बड़ी चाहत यह होती है कि जितना ज़्यादा हो सके दोनों एक दूसरे के साथ बातें करते रहें।

रोज़े का सबसे बड़ा मक़सद अपने महबूब यानी अपने पालने वाले ख़ुदा से मुलाक़ात करना और बातें करना है। यह इन्सानियत का सबसे ऊँचा मुक़ाम और इन्सान के लिए सबसे प्यारे पल हैं। इन मीठे-मीठे पलों तक पहुंचने के लिए इन्सान रोज़े के ज़रिये अपने आपको सारी हैवानी और जिस्मानी ख़ाहिशों से पाक करता है। रोज़ा रखकर वह ख़याली अय्याशी से आज़ाद हो जाता है, अब उसे झूठ बोलने या किसी की ग़ीबत या बुराई करने में मज़े के बजाय तकलीफ़ होती है, अब उसने अपनी आंखों, कानों और ज़ुबान को हर बुराई से पाक-साफ़ कर लिया है अब वह खानों के ज़ायक़ों और मज़ों से ऊपर उठ चुका है क्योंकि अब उसे अपने महबूब से मुलाक़ात और उससे बातें करने में मज़ा आने लगा है।

हदीस में आया है, ''रोज़ेदार को दो मौक़ों पर ख़ुशी का एहसास होता हैः एक इफ़्तार के वक़्त और दूसरे अपने पालने वाले से मुलाक़ात के वक़्त।''

इफ़्तार के वक़्त इसलिए क्योंकि ख़ुदा ने उसे तौफ़ीक़ दी और उसका रोज़ा पूरा हो गया यानी मरीज़ नहीं हुआ, उसे कोई सफ़र नहीं करना पड़ा, उसे शैतान ने नहीं बहकाया या ख़ुदा ने उसे किसी और काम में नहीं लगाया क्योंकि ख़ुदा हर एक को अपनी बारगाह में आने की इजाज़त नहीं देता, वह जिन्हें अपनी बारगाह के लायक़ नहीं समझता उन्हें दूसरे कामों में लगा देता है, कभी इन्सान को परेशानियों और मुसीबतों में उलझा देता है तो कभी हद से ज़्यादा नेमतें देकर उन्हीं में फंसा देता है।

रोज़ेदार को दूसरी ख़ुशी उस वक़्त होती है जब वह ख़ुदा से मुलाक़ात करता है क्योंकि यही एक इन्सान के लिये सबसे बड़ी नेमत है। अगर इन्सान इस बात को अच्छी तरह समझ ले कि क़ुरआन ख़ुदा का कलाम है और जब वह क़ुरआन पढ़ता है तो ख़ुदा उससे बातें कर रहा होता है तो फिर वह क़ुरआन को सिर्फ़ सवाब के लिये नहीं पढ़ेगा बल्कि क़ुरआन की आयतों को अपनी ज़िंदगी में ढालने की कोशिश करेगा।

इसी तरह अगर इन्सान इस बात को भी समझ ले कि दुआ करते वक़्त वह ख़ुदा से बातें कर रहा होता है और ख़ुदा बहुत क़रीब से उसकी दुआओं को सुनता है तो फिर वह ख़ुदा की बारगाह में छोटी-छोटी सी चीज़ें नहीं मांगेगा बल्कि वह चीज़ें माँगेगा जो उसके स्टेटस के हिसाब होंगी।

ऐसा भी हो सकता है कि वह कुछ माँगने के बजाये सिर्फ़ अपने परवरदिगार से बातें करने के लिए ही दुआ कर रहा हो और अगर कुछ माँग भी रहा हो तो ख़ुदा से ख़ुदा को ही माँग रहा हो क्योंकि अगर इन्सान को ख़ुदा मिल जाये तो कुछ न होते हुए भी सब कुछ मिल जायेगा और अगर ख़ुदा न मिला तो सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं मिलेगा।

''पालने वाले! उसने क्या पाया जिसने तुझे खो दिया और उसने क्या खोया जिसने तुझे पा लिया।'' (इमाम हुसैन[अ०])

सब कुछ ख़ुदा की नज़र में है

आप ने कोरोना वायरस के ज़रिये फैलने वाली बर्बादी के बारे में सुन लिया होगा। यह भी सुन लिया होगा कि वेस्टर्न मुल्क भी अभी तक इसको पूरी तरह से कन्ट्रोल नहीं कर पा रहे हैं। इस तरह की बहुत सी ख़बरें सुनी होंगी जिनकी वजह से आपकी घबराहट और परेशानियाँ काफ़ी बढ़ गई होंगी।

यह सारी बातें अपनी जगह सही हैं लेकिन कुछ और चीज़ें भी हैं जो अपनी जगह एक हक़ीक़त हैं, उनको भी जान लेना ज़रूरी है।

पहली बात यह है कि अल्लाह ही दुनिया का सिस्टम चला रहा है और इस बात का भी कोई चाँस नहीं है कि फ़्यूचर में उसकी जगह कोई और ले सकेगा।

दूसरी बात यह है कि वह ज़िन्दा है और हर चीज़ की ज़िन्दगी व मौत का मालिक है।

तीसरी बात यह है कि ख़ुदा के इरादे के बग़ैर यहाँ छोटी से छोटी चीज़ अपनी जगह से नहीं हिलती है, न ही एक पत्ता पेड़ से गिरता है।

चौथी बात यह है कि अल्लाह को न नींद आती है न कभी ऊँघ कि वह अपनी पैदा की हुई चीज़ों को ही अंदेखा कर दे।

पाँचवीं बात यह है कि उसका हुक्म और उसकी हुकूमत आसमान और ज़मीन की हर चीज़ पर है।

छठी बात यह है कि चाहे कोई सितारा हो, चाहे कोई इन्सान हो या फिर कोई वायरस, कोई भी उसकी मर्ज़ी के बग़ैर अपनी जगह से नहीं हिल सकता।

यह सारी बातें बता रही हैं कि अल्लाह की ताक़त की कोई हद और कोई हिसाब नहीं है लेकिन इसके साथ ही साथ कुछ और हक़ीक़तें भी हैं।

वह एक रहम और करम करने वाली हस्ती है जिसकी रहमत सब पर छाई हुई है। वह ज़ुल्म और नाफ़रमानी को बिल्कुल पसन्द नहीं करता, घमण्डी और ग़फ़लत में पड़े हुए लोग उसे बिल्कुल अच्छे नहीं लगते हैं। शिर्क, तौहीद का इनकार, बिदअतों या फ़िरक़ों की आपसी लड़ाई को वह "सीधे रास्ते" से भटकाव समझता है लेकिन फिर भी उसका करम, उसका रहम और उनका हिल्म पूरी इन्सानियत पर छाया हुआ है।

ऐसे में शिर्क के इतने भयानक रूप में सामने आने के बाद भी नाफ़रमानी और ग़फ़लत की हदों को फलांगने के बाद भी कुछ लोग अगर उसकी तरफ़ लौट आने पर तैयार हो जाएं तो फिर वह कुछ लोग अल्लाह को हर चीज़ से ज़्यादा प्यारे होते हैं। इन सच्चे और अच्छे मोमिनों के लिए ख़ुदा करोड़ों-अरबों गुनाहगारों को भी अंदेखा कर देता है।

इसलिए अगर यह मान भी लिया जाए कि कोरोना के वायरस के ज़रिये उसने लाखों लोगों को ख़त्म करने का फ़ैसला कर भी लिया हो या उसने इन्सानियत को उसकी नाफ़रमानी पर सज़ा देने का फ़ैसला कर भी लिया हो तब भी वह अपने हर फ़ैसले को वापस ले सकता है।

उसकी एक नज़र का इशारा होगा और हर चीज़ ठीक हो जाएगी।

बेकार और निकम्मे लीडरों को सही फ़ैसलों की तौफ़ीक़ दे दी जाएगी।

लोगों को बेवकूफ़ियाँ करने से रोक दिया जाएगा।

बीमारी का इलाज ढूँढ लिया जाएगा। वायरस का फैलाव रुक जाएगा।

मौत का यह सैलाब थम जाएगा।

लेकिन इसका तरीक़ा वज़ीफ़े पर वज़ीफ़े पढ़ना नहीं है। सोचे-समझे बिना रटे-रटाए लफ़्ज़ों को दोहराना नहीं है। इसका तरीक़ा मज़हब के नाम पर टोटके बाज़ी करना भी नहीं है।

इसका तरीक़ा वही है जो ख़ुदा ने ख़ुद बताया है। वह कहता है कि ऐ मेरे नबी! जब तुम से मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछें तो उन्हें बता दो मैं उन से क़रीब हूँ। पुकारने वाला जब मुझे पुकारता है तो मैं उसकी पुकार सुनता हूँ।

इसलिए ख़ुदा को पुकारना ही हमारा असली काम है। जब बन्दे ख़ुद को अपने रब के क़दमों में डाल देते हैं तो वह उनकी हर बात सुनता है। जब वह सच्ची तौबा करते हैं तो वह उनकी तौबा को अच्छी तरह से सुनता है। जब वह तास्सुब, ख़्वाहिशों और ग़फ़लत से पाक दिल लेकर उसके सामने हाज़िर होते हैं तो वह सुनता है।

आज भी ख़ुदा उसी पुकार का इन्तेज़ार कर रहा है। अब देखना यह है कि ज़मीन पर कौन है जो उसे इस तरह पुकारता है। जो सच्चे दिल से पुकारेगा वह जवाब भी सुन लेगा।

आज़मा कर देख लीजिए!

■ इब्ने हैदर मूसवी

लॉकडाउन के हालात में क्या है हमारी ज़िम्मेदारी

दुनिया का कोई मुल्क नहीं जो कोरोना वायरस की लपेट में न आया हो। यह वायरस क्या है? कहाँ से आया है? किसने बनाया है? इसके बारे में तरह-तरह की बातें हैं। यह ख़ुदा का अज़ाब है या कुछ और, इस बारे में भी कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन इतना ज़रूर है कि इस वायरस की वजह से जो हालात पैदा हुए हैं उसने हमें बहुत कुछ सिखा दिया है, बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया है और हमारे कन्धों पर बहुत सी ज़िम्मेदारियाँ डाल दी हैं। ख़ास कर इस महामारी से बचने के लिए लॉकडाउन की वजह से जो हालात बने हैं उसने हमें और भी ज़िम्मेदार बना दिया है। इन हालात में हमारी क्या ज़िम्मेदारियाँ और हमें क्या करना है, इसे समझने के लिए हम कुछ बातों की तरफ़ आपका ध्यान मोड़ना चाहेंगेः

1- हमारी पहली ज़िम्मेदारी इस बीमारी के बारे में सीरियस होना और इस से लड़ने के लिए हर तरह की कोशिश करना है। जिसके लिए हम कम से कम यह कर सकते हैं कि ख़ुद भी इसकी लपेट में आने से बचें और अपने बच्चों और बड़ों को भी इस से बचाए रखने की पूरी कोशिश करें। साथ ही इस से बचने के लिए एक्सपर्ट्स की तरफ़ से जो हेल्थ गाइडेन्स दी जा रही हैं उनका भी ध्यान रखें।

2- इन हालात में जहाँ इलाज, दवा और हेल्थ केयर ज़रूरी है, वहीं ख़ुदा से रिश्ता बनाए रखना और उसकी बारगाह में दुआ करना और इस से इन हालात से निमटने के लिए मदद माँगना भी बहुत ज़रूरी है। दुनिया भर से आने वाली ख़बरों में शायद आपने कुछ ऐसी ख़बरें भी सुनी होंगी कि जहाँ एक तरफ़ मस्जिदों, मन्दिरों, चर्चों और इस तरह की दूसरी जगहों के दरवाज़े बन्द कर दिये गये, वहीं दूसरी तरफ़ लोगों के दिलों के दरवाज़े खुल चुके हैं। ऐसे लोगों ने भी ख़ुदा की तरफ़ लौटना शुरु कर दिया है जो शायद ख़ुदा को भुला बैठे थे, जिन्होंने शायद ख़ुदा को ज़िन्दगी भर एक भी सजदा नहीं किया था।

हम लोग तो रमज़ानुल मुबारक में इस वक़्त ख़ुदा के ख़ास मेहमान हैं और उसने हमें अपने साथ जुड़ने का ख़ास मौक़ा दिया है। इसलिए हाथ उठाईये और दुआ कीजिए, दिल को झुकाईये और अपने रब की बारगाह में तौबा व इस्तेग़फ़ार कीजिए।

3- हम सब इस वक़्त ख़ुदा के रहम व करम के मोहताज हैं, लेकिन हदीसों में है कि ख़ुदा भी उसी पर रहम करता है जो उसके बन्दों पर मेहरबानी करता है। ख़ुदा रहमान है, रहीम है, करीम है और वह अपने बन्दों को भी एक-दूसरे के साथ मेहरबान देखना

चाहता है। हमारी मुसीबतों में गिरफ़्तार होने की एक वजह यह भी है कि हम ख़ुदा को भुला बैठे हैं। शायद हम नमाज़ भी पढ़ते हों, दुआ भी करते हों, क़ुरआन भी पढ़ते हों, लेकिन हो सकता है कि इसके बाद भी ख़ुदा को भुला बैठे हों।

हदीसे क़ुदसी में है कि क़यामत के दिन ख़ुदा अपने बन्दे से शिकायत करेगा कि मैं भूखा था तूने मुझे खिलाया नहीं, मैं प्यासा था तूने मुझे पिलाया नहीं, मेरे पास कपड़े नहीं थे तूने मुझे कपड़े नहीं दिये, मेरे पास सर छुपाने को छत नहीं थी तूने मुझे जगह नहीं दी।

बन्दा हैरान होकर पूछेगाः ऐ ख़ुदा! तुझे इन चीज़ों की ज़रूरत नहीं होती, तुझे कब इन चीज़ों की ज़रूरत थी जो मैं देता ?

ख़ुदा कहेगाः मेरे बहुत सारे बन्दे भूखे थे तूने उनका पेट नहीं भरा। मेरे बन्दे प्यासे थे तूने उनकी प्यास नहीं बुझाई। मेरे बन्दों के पास कपड़े नहीं थे तूने उन्हें कपड़े नहीं दिए। मेरे बन्दे बेघर थे तूने उन्हें सर छुपाने को जगह नहीं दी।

हम सब जानते हैं कि हमारे मुल्क में ग़रीबी का क्या हाल है। लाखों लोग ऐसे हैं जो दिन में कमाते और शाम को खाते हैं। लॉकडाउन के इन हालात में उन से उनका काम-धंधा भी छिन चुका है। उनके क्या हालात होंगे हमें नहीं पता। अब तक न जाने कितने लोग भूख से मर चुके हैं या मरने वाले हैं, हमें नहीं पता। बहुत से लोग समझते हैं कि हुकूमत राशन पहुँचा रही है, बहुत सी एन.जी.ओज़ और तनज़ीमें काम कर रही हैं, इस लिए हमें कुछ करने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन ऐसा सोचना न सिर्फ़ ना-इंसाफ़ी है बल्कि ईमान में कमज़ोरी की निशानी भी हो सकती है क्योंकि अगर दूसरे अपनी ज़िम्मेदारी निभा रहे हैं तो हमें भी अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करना है।

> रसूले इस्लाम[अ०]
> *जो आदमी ख़ुद तो अपना पेट भरकर सो जाए मगर उस का पड़ोसी भूखा रह जाए, ऐसा आदमी मेरे ऊपर ईमान नहीं लाया है।*
> (मुस्तदरक, 8/429)

यह रमज़ान का मुबारक महीना है। इस महीने में ख़ुदा ने उसके बन्दों की तरफ़ ध्यान देने का ख़ास तौर से हुक्म दिया है। इसी महीने में इमाम अली[अ०] की शहादत भी हुई थी और अपनी शहादत से पहले इमाम ने अपनी आख़िरी वसिय्यत में यतीमों, बेवाओं और ज़रूरतमन्दों के बारे में बहुत ज़ोर देकर वसिय्यत की है।

इसी महीने में उस अज़ीम बीबी की वफ़ात भी हुई है जिन्हें अरब की मलका कहा जाता था और जिन्होंने अपनी सारी दौलत ख़ुदा के बन्दों और उसके दीन के लिए ख़र्च कर दी थी।

इसी महीने में हमारे उस इमाम[अ०] की विलादत हुई है जिनका दस्तरख़्वान हमेशा बिछा रहता था और रोज़ाना सैकड़ों लोग खाते भी थे और साथ में ले भी जाते थे। हम सब उनके चाहने वाले, उनके नाम लेने वाले और उनकी मोहब्बत का दम भरने वाले हैं।

आज इन हालात में ख़ुदा ने हमें मौक़ा दिया है कि हम अपनी ज़िन्दगी से बाहर निकल कर ज़रा दूसरों की ज़िन्दगी पर भी एक नज़र डालें। हमारे रिश्तेदारों के क्या हालात हैं, हमारे पड़ोस में कैसे हालात हैं, हमारी सोसाइटी या कालोनी किन हालात से गुज़र रही है। कोई यतीम आँसू तो नहीं बहा रहा है ? कोई बेवा अपने बच्चों को पेट भरने से बेबस तो नहीं है ?कोई मज़दूर और ग़रीब बाप अपने बच्चों के सामने शर्मिन्दा तो नहीं है ?

ख़ुदा ने हमें जितना दिया है, उसमें हम जितना दूसरों के लिए कर सकते हैं, जितनी मदद कर सकते हैं, उतना करना हमारी ज़िम्मेदारी है।

इसलिए लॉकडाउन के इन हालात में और इसके बाद भी... ख़ुद भी उठिये और अपने साथ अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को भी जोड़िये। आइए! ऐसे लोगों को तलाश करते हैं जिन्हें खाने-पीने की चीज़ों की, दवाईयों की या किसी और तरह के सहारे की ज़रूरत है। चुपके से उनकी मदद करते हैं और इमाम अली[अ०] की सीरत पर चलने की कोशिश करते हैं। हमारे वही इमाम जिनके जिस्म पर उन बोरियों के निशान तक पड़ गए थे जिनमें वह खाने-पीने का सामान ले जाया करते थे और हर रात ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों में बाँट दिया करते थे। किसी को पता भी नहीं हो पाता था कि कौन उनकी मदद कर रहा है। हम हर साल रमज़ानुल मुबारक में इमाम अली[अ०] की शहादत पढ़ते, सुनते और सुनाते है।

आइए! इस साल उन की सीरत पर अमल भी करें।

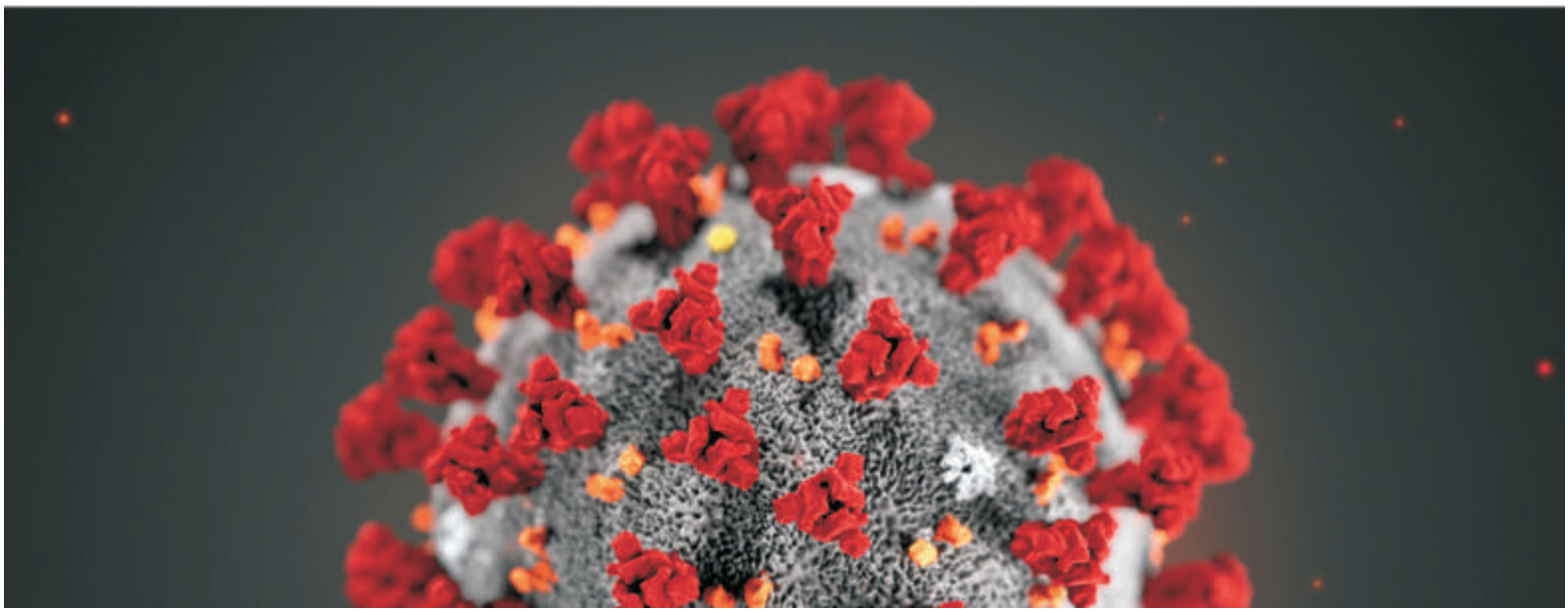

इमाम हसन अ०
एक बहादुर इमाम

■ सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामेनइ

इमाम हसन अ० की सुलोह (सुल्ह) और इमाम हुसैन अ० की जंग की जब बात आती है तो पूछा जाता है कि इमाम हसन अ० ने सुलोह क्यों कर ली थी, उन्होंने भी जंग का रास्ता क्यों नहीं अपनाया था ?

इस मामले को समझने के लिए ज़रूरी है कि हम उस वक़्त के हालात को अच्छी तरह से जानें और फिर यह समझें कि इमाम हसन अ० के पास दो रास्ते थेः एक जंग का रास्ता और दूसरा सुलोह का रास्ता।

अब सवाल यह है कि इनमें से इमाम हसन अ० ने जंग का रास्ता छोड़ कर सुलोह का रास्ता क्यों अपनाया ?

इस बात में कोई शक नहीं है कि इमाम हसन अ० लोगों की बात मानते हुए जंग का रास्ता भी चुन सकते थे। इमाम हसन अ० बनी हाशिम घराने से थे और इमाम सज्जाद अ० के मुताबिक़ बनी हाशिम वह हैं जिनका रास्ता मौत है, मौत में ही इज़्ज़त है। यह वह लोग हैं जिनके लिए शहादत का रास्ता हमेशा खुला हुआ है और वह ख़ुद को दीन के नाम पर क़ुर्बान करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। अगर हम इमाम हसन अ० की सोच को न भी जानें तब भी उनके इस ख़ानदानी बैक-ग्राउण्ड की वजह से यह बात कही जा सकती हैः '' इमाम हसन अ० अपने इन कम साथियों को लेकर जंग करने क्यों नहीं गये। ऐसी सूरत में इमाम अ० शहीद हो जाते और शहादत इस घराने की पहचान थी ही। आपके भाई इमाम हुसैन अ० ने भी तो जंग का रास्ता ही चुना था ?''

कुछ लोग इसी नज़र से इमाम हसन अ० के बारे में सोचते हैं और फिर उनके सामने यही सवाल आता है। इसमें कोई शक नहीं है कि यह एक बहादुरी भरा और जोश दिलाने वाला काम है। अगर उस दिन इमाम हसन अ० जंग के लिए उठ जाते और फिर शहीद हो जाते तो हो सकता था कि उस वक़्त के दस-बीस या सौ-पाँच सौ लोग इस काम की तारीफ़ करते लेकिन यह काम इस्लाम को बिल्कुल मिटा देने जैसा होता। अगर इमाम हसन अ० उस जंग में क़त्ल हो जाते तो इसका नतीजा बस यही निकलता कि इस्लाम इन्सानी समाज से हमेशा के लिए दूर हो जाता। उस वक़्त कुछ लोग ज़रूर इमाम हसन अ० के इस काम की तारीफ़ें करते और कहते फिरते कि इमाम हसन अ० ने बड़ा बहादुरी वाला काम किया है कि इतने कम साथियों के होते भी जंग के मैदान में कूद पड़े मगर इमाम अ० ने इस रास्ते को छोड़ते हुए इसके बदले में अपने दोस्तों के ताने, क़रीबी साथियों के एतेराज और, उन हालात के बारे में आने वाली नस्लों में पैदा होने वाली ग़लत फ़हमियों को बर्दाश्त कर लिया। ऐसा इमाम हसन अ० ने सिर्फ़ इसलिए किया था ताकि इस्लाम बच जाए।

इमाम हसन अ० इस्लामी हिस्ट्री के सबसे बहादुर इन्सान

इसी वजह से मेरा मानना है कि इमाम हसन अ० इस्लामी हिस्ट्री के सबसे बहादुर इन्सान हैं। हो सकता है कि आप सवाल करें कि क्या वह हज़रत अली अ० और अपने भाई इमाम हुसैन अ० से भी ज़्यादा बहादुर हैं जिन्होंने इतनी बड़ी-बड़ी क़ुर्बानियाँ देकर शहादत को गले से लगाया था ?

मेरा मानना है कि साउथ अफ़्रीक़ा में रहने वाले गाँधी हिन्दुस्तान के गाँधी से कहीं ज़्यादा बहादुर थे। वह गाँधी जो साउथ अफ़्रीक़ा में अपने दोस्तों के हाथों मार खाते थे। वही दोस्त जिनके लिए उन्होंने वतन से दूरी और तकलीफ़ें उठाई थीं और साउथ अफ़्रीक़ा गये थे। वह हमेशा महात्मा गाँधी पर एतेराज़ करते थे कि इन सारी मुश्किलों की वजह बस तुम हो। मेरी नज़र में यह गाँधी उस गाँधी से ज़्यादा बड़े और ज़्यादा बहादुर हैं जिसके नाम के नारे हिन्दुस्तान में पब्लिक लगाती रहती है।

जी हाँ! असली बहादुरी यह है कि इन्सान अपनी सोच और आइडियालोजी को सामने रखकर क़दम उठाए, चाहे उसकी बात कोई माने या न माने।

इमाम हसन[अ०] ने अपने मक़सद के लिए अपने नाम, अपनी पर्सनॉलिटी और अपना सब कुछ अपने दोस्तों की नज़र में क़ुर्बान कर दिया था। इमाम हसन[अ०] के सामने बस एक मिशन था कि बस इस्लाम बच जाए, बदले में चाहे मैं मिट जाऊँ और मेरा नाम लेने वाला कोई भी न हो।

इमाम हसन[अ०] ने जंग क्यों नहीं की ?

क्या इमाम हसन[अ०] के पास मुआविया से जंग करने का कोई रास्ता था और क्या वह सुलोह को छोड़ कर जंग करते हुए शहीद हो सकते थे ?

नहीं! वह ऐसा बिल्कुल नहीं कर सकते थे। शहीद कौन होता है ? शहीद वह होता है जो अपनी जान की बाज़ी लगाता है और अपना ख़ून बहाता है ताकि वह अपनी उस आइडियॉलोजी और अपने उन नज़रियों को बचा ले जो उसे जान से भी ज़्यादा प्यारे हैं। इमाम हुसैन[अ०] शहीद हैं क्योंकि वह जिन वैल्यूज़ को बचाना ज़रूरी समझते थे उनके लिए क़ुर्बान हो गये ताकि वह वैल्यूज़ समाज में बाक़ी रह जाएं। पूरी हिस्ट्री में आज़ादी, सच्चाई और दूसरी बड़ी वैल्यूज़ के लिए शहीद होने वाले लोग शहीद हैं क्योंकि उन्होंने अपनी जान क़ुर्बान करना बर्दाश्त कर लिया ताकि यह वैल्यूज़ बाक़ी रह जाएं। उन्होंने इस लिए मरना बर्दाश्त कर लिया ताकि उनके नज़रिये और उनका मिशन बाक़ी रह जाए लेकिन जंग के मैदान में इमाम हसन[अ०] की मौत इस तरह की न होती। अगर इमाम हसन[अ०] जंग के मैदान में क़त्ल हो जाते तो इसका मतलब यह होता कि अब मुआविया के सामने उसका वह एक दुश्मन भी नहीं रहेगा जो उस से लड़ भी रहा है और उसके छुपे हुए कामों से पर्दा भी उठा रहा है।

अगर इमाम हसन[अ०] क़त्ल हो जाते तो इसका मतलब यह होता कि लोगों ने उस हस्ती का क़त्ल होना बर्दाश्त कर लिया है जो मुआविया के चेहरे पर पड़ी हुई नक़ाब को हटा सकता था और मुआविया की असलियत लोगों के सामने ला सकता था। आप ज़रा सोचिए कि ऐसे समाज की क्या हालत होगी जिसमें हुकूमत मुआविया के हाथों में हो मगर उस समाज में इमाम हसन[अ०] या इमाम हुसैन[अ०] न हों? उस समाज में सबसे ऊपर वह आदमी हो जो सारी इस्लामी वैल्यूज़ का जानी दुश्मन है, जो इस्लामी तौहीद यानी उस तौहीद का मुख़ालिफ़ हो जो ख़ुदा की ताक़त के अलावा सारी ताक़तों को नकारती है, जो समाज के लोगों के एक-जैसा होने, सारे इन्सानों के बराबर होने और सबके लिए एक-जैसे राइट्स की बात करती है। एक ऐसा समाज जिसमें हुकूमत करने वाला सिर्फ़ अपने आप को और अपने क़रीबी लोगों को ही अहमियत देने की बात करता है, जो इस्लाम पर बिल्कुल ईमान नहीं रखता और इन्सानी उसूलों को अपने पैरों तले रौंदता है। सिर्फ़ एक क़ानून उसके सारे कामों का सेन्टर है और वह है अपने आप से मोहब्बत और ख़ुद को ज़्यादा से ज़्यादा मज़बूत बनाना।

हम ऐसे समाज के बारे में क्या सोच सकते हैं जिसमें ऐसा आदमी तो मौजूद हो लेकिन इस्लाम को जानने वाला और समझने या समझाने वाला कोई इन्सान न हो, जिस समाज में एक भी ऐसा इन्सान न हो जो मुआविया के ग़लत कामों से पर्दा उठाए और ज़माने को बताए या अगर ज़माने को न बता सके तो कम से कम हिस्ट्री के सामने सब कुछ खोल कर जाए ताकि आने वाली नस्लों को ही पता चल सके।

इमाम हसन[अ०] के बहादुर होने का सुबूत

इमाम हसन[अ०] के लिए यह सिचुवेशन भी पेश आ सकती थी कि जिस वक़्त मदायन में उनको घेरा गया था और उन पर जानलेवा हमला किया गया था, वह अपने कुछ ख़ास साथियों के साथ मस्किन चले जाते और वहाँ क़ैस बिन सअद की कमांड में लश्कर के साथ अचानक मुआविया के लश्कर पर हमला कर देते और फिर सबके साथ इमाम हसन[अ०] शहीद हो जाते। इमाम हसन[अ०] यह काम भी

कर सकते थे और दूसरे सब लोग भी यह काम कर सकते हैं।

जिस चीज़ ने इमाम हसन[अ०] को यह रास्ता चुनने से रोका था वह डर नहीं था। इमाम हसन[अ०] तो मौत से डरते ही नहीं थे।

इमाम हसन[अ०] के मौत से न डरने को साबित करने के लिए किसी सुबूत की ज़रूरत नहीं है। अगर कोई यह जानना चाहता है कि इमाम हसन[अ०] मौत से डरते थे या नहीं, तो उसे ऐसे किसी सुबूत की ज़रूरत नहीं है जिस से पता चल जाए कि इमाम हसन[अ०] बहुत बहादुर थे और मौत से नहीं डरते थे।

हमारे लिए बस यही जानना काफ़ी है कि वह हाश्मी ख़ानदान के थे और यह वह ख़ानदान है जिसके लिए मौत हमेशा एक खेल रहा है। इस घराने के लोग मौत से बिल्कुल नहीं डरते थे।

इमाम हसन[अ०] हज़रत अली[अ०] यानी इस्लाम के उस बेमिसाल बहादुर कमाण्डर और ख़ुदा के शेर के बेटे हैं और इमाम हुसैन[अ०] के बड़े भाई हैं। ख़ुद इमाम हुसैन[अ०] भी अपने बड़े भाई इमाम हसन[अ०] को अपना इमाम मानते थे। इमाम हसन[अ०] ऐसे ख़ानदान और ऐसी नस्ल से थे।

दूसरी बात यह है कि जिसके हाथ से इस्लामी हुकूमत व ख़िलाफ़त निकल जाए और उस पर तरह-तरह के इल्ज़ामों की बौछार लग जाए, अब ज़िन्दगी में उसके लिए बचता ही क्या है कि जिसके लिए वह ज़िंदा रहना चाहे और ऐसी ज़िन्दगी जीना बर्दाश्त कर ले ?

इन सारी बातों से हटकर इमाम हसन[अ०] दूसरे लोगों से कहीं ज़्यादा मुआविया को पहचानते हैं और उसके बाप-दादा और उसके साथियों को भी। इसीलिए इमाम हसन[अ०] अच्छी तरह से जानते थे कि मुआविया के होते हुए वह कभी आराम से नहीं जी सकते।

इमाम हसन[अ०] की बहादुरी को समझने के लिए किसी सुबूत की ज़रूरत नहीं है। हमारे लिए सिर्फ़ इतना जानना ही काफ़ी है कि इमाम हसन[अ०] किस ख़ानदान से हैं और किस ज़माने में ज़िन्दगी जी रहे थे। ●

पहले सोचो फिर बोलो

न जाने कितने ऐसे लोग हैं जो कोई बात कहने के बाद पछताते भी हैं और फिर सोचते हैं कि काश यह बात कही ही न होती।

यह पछतावा बात के ग़लत होने और बिना सोचे-समझे या जानकारी लिए बिना बोलने की वजह से होता है या फिर इस वजह से भी होता है कि जो बात उनके मुँह से निकल जाती है उससे किसी का कोई राज़ खुल जाता है, किसी की बेइज़्ज़ती हो जाती है, कोई नुक़सान हो जाता है, किसी तरह का झगड़ा पैदा हो जाता है या फिर कोई नाराज़ हो जाता है।

इसलिए बात करने से पहले ख़ूब सोच-समझ लेना चाहिए। अगर सही और काम की बात हो तभी अपनी ज़बान खोलना चाहिए ताकि बाद में कोई पछतावा या नुक़सान न हो।

यह बात हज़रत अली[अ०] ने भी कही है।

आप फ़रमाते हैं:

"जब तक तुम ने अपनी बात नहीं कहते हो तब तक वह बात तुम्हारी क़ैद में रहती है मगर जैसे ही तुम कोई बात कह देते हो वैसे ही तुम उसकी क़ैदी बन जाते हो।"

इमाम अली[अ०] ज़बान को संभाल कर रखने का हुक्म देते हुए फ़रमाते हैं कि ज़बान आदमी को गहरी खाईयों में गिरा देती है लेकिन ज़बान को बचाए रखने के लिए तक़वा बहुत ज़रूरी है। अगर तक़वा होगा तभी आदमी अपनी ज़बान को संभाल कर रख सकता है।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

"बेशक! मोमिन की ज़बान उसके दिल के पीछे होती है और मुनाफ़िक़ का दिल उसकी ज़बान के पीछे क्योंकि मोमिन जब कोई बात कहना चाहता है तो पहले उसे दिल में सोच लेता है। अगर वह अच्छी बात होती है तभी अपनी ज़बान पर लाता है और अगर बुरी होती है तो उसे छुपा ही रहने देता है। मगर मुनाफ़िक़ की ज़बान पर जो भी आता है वह कह बैठता है। उसे कुछ पता ही नहीं होता कि कौन सी बात उसकी भलाई में है और कौन सी बात नुक़सान में।"

रोज़े के अहकाम

सवाल-1 अगर मैं सहरी के लिए न उठ सकूँ और पहले से रोज़े की नियत भी न की हो तो क्या सुबह सोकर उठने के बाद रोज़े की नियत कर सकती हूँ ?

जवाबः इस सूरत में ज़ोहर से पहले नियत करके रोज़ा रखिए और बाद में क़ज़ा भी कीजिए। ज़ोहर के बाद नियत सही नहीं है।

(आयतुल्लाह ख़ामेनई)

अगर आप नहीं उठ सकीं और सुबह तक सोती रहीं तो ज़ोहर से पहले तक नियत कर सकती हैं। अगर ज़ोहर तक भी नियत न की हो और कोई ऐसा काम भी न किया हो जिससे रोज़ा टूट जाता है तो एहतियाते वाजिब की बुनियाद पर उस दिन रोज़े की हालत में रहिए और रमज़ानुल मुबारक के बाद उस दिन के रोज़े की क़ज़ा भी कीजिए। (आयतुल्लाह सीस्तानी)

सवाल-2 अगर कोई औरत रात में हैज़ (पीरियड्स) से पाक हो जाए लेकिन उसने सुबह की नमाज़ से पहले तक ग़स्ल न किया हो तो क्या वह रोज़ा रख सकती है ?

जवाबः रोज़ा बातिल है और उसे क़ज़ा करना होगी।

(आयतुल्लाह ख़ामेनई)

अगर वह ग़ुस्ल या तयम्मुम कर सकती थी लेकिन उसने जानबूझ कर नहीं किया तो ऐसे में उस दिन का रोज़ा क़ुरबत की नियत से रखेगी और बाद में उसकी क़ज़ा करेगी। (आयतुल्लाह सीस्तानी)

सवाल-3 एक औरत प्रेग्नेंट होने या बच्चे को दूध पिलाने की वजह से रोज़ा नहीं रख सकती क्योंकि रोज़े की वजह से उसे या उसके बच्चे को नुक़सान हो सकता है। ऐसे में उसकी ज़िम्मेदारी क्या है ?

जवाबः अगर वह नहीं रख सकती तो रोज़ा नहीं रखेगी और रमज़ानुल मुबारक के बाद जब भी वह क़ज़ा कर सकती हो छूटे हुए रोज़ों की क़ज़ा करेगी। साथ ही हर रोज़े के बदले एक मुद तआम (750 ग्राम अनाज) भी किसी फ़क़ीर को देगी।

सवाल-4 अगर किसी औरत ने पिछले रमज़ान में प्रेग्नेंसी की वजह से रोज़े न रखे हों और उसके बाद बच्चे को दूध पिलाने की वजह से क़ज़ा रोज़े भी न रखे हों तो ऐसे में क्या हुक्म है ?

जवाबः अगर रमज़ान में और उसके बाद पूरे साल रोज़ा रखना मुश्किल रहा हो तो सिर्फ़ कफ़्फ़ारा (हर रोज़े के बदले 750 ग्राम अनाज) देना होगा।

सवाल-5 क्या कोई लड़की अपने माँ-बाप के रोज़ों की क़ज़ा कर सकती है ?

जवाबः कर सकती है।

सवाल-6 क्या किसी ज़िन्दा आदमी या औरत की तरफ़ से उसके रोज़े-नमाज़ों की क़ज़ा की जा सकती है ?

जवाबः किसी की ज़िंदगी में न उसकी तरफ़ से नमाज़ पढ़ी जा सकती है और न ही रोज़े रखे जा सकते हैं।

सवाल-8 क्या रमज़ानुल मुबारक के महीने में सफ़र कर सकते हैं ?

जवाबः रमज़ानुल मुबारक में सफ़र करने में कोई हरज नहीं है।

सवाल-9 एक नॉन मुस्लिम मुसलमान हुआ हो तो क्या उसके लिए उन दिनों के रोज़ों की क़ज़ा वाजिब है जब वह मुसलमान नहीं था ?

जवाबः वाजिब नहीं है।

सवाल-10 अगर कोई कोमा में हो या बेहोश हो और बाद में ठीक हो जाए तो क्या उस पर उन दिनों के रोज़ों की क़ज़ा वाजिब है जिन दिनों में वह कोमा में या बेहोश था ?

जवाबः उन दिनों के रोज़े उस पर वाजिब नहीं थे इसलिए क़ज़ा भी नहीं है।

सवाल-11 अगर किसी को पता न हो कि रमज़ानुल मुबारक का पहला दिन है या शाबान का आख़िरी दिन जिसकी वजह से वह रोज़ा न रखे और बाद में पता चले कि रमज़ानुल मुबारक का पहला दिन था तो ऐसी हालत में रोज़े का क्या हुक्म होगा ?

जवाबः उस दिन के रोज़े की क़ज़ा करना होगी।

सवाल-12 रमज़ान के आख़िरी दिन मोमिनीन के बीच दो तरह के चर्चे थे कि ईद का दिन है या रमज़ान का आख़िरी दिन लेकिन यह सोच कर रोज़ा नहीं रखा कि कहीं हराम रोज़ा न हो जाए। बाद में पता चला कि रमज़ानुल मुबारक का आख़िरी दिन था। ऐसे में क्या हुक्म है ?

जवाबः रोज़े की क़ज़ा करना होगी।

सवाल-13 कुछ लोग माहे रमज़ान में किसी बीमारी की वजह से रोज़ा नहीं रख पाते। यह लोग रमज़ान के बाद कफ़्फ़ारा निकाल देते हैं और समझते हैं कि ज़िम्मेदारी पूरी हो गई और इसीलिए ठीक होने के बाद भी अपने छूटे हुए रोज़ों की क़ज़ा नहीं करते। क्या ऐसा करना सही है ?

जवाबः बीमारी की वजह से छूट जाने वाले रोज़ों की क़ज़ा वाजिब है। कफ़्फ़ारा सिर्फ़ उन बीमारों के लिए है जो बिल्कुल रोज़ा न रख सकते हों, या जो अगले साल के रमज़ान तक बीमारी की वजह से रोज़ा न रख पाएं।

सवाल-14 अगर कोई न जानता हो या भूल गया हो कि रमज़ानुल मुबारक में उसके कितने रोज़े क़ज़ा हुए हैं तो उसे कितने रोज़े रखना चाहिएं ?

जवाबः कम से कम तादाद जो उसे लगता है कि इतने रोज़े छूटे होंगे रख ले तो काफ़ी है। लेकिन एहतियाते मुस्तहब यह है कि इतने रोज़े रखे कि यक़ीन हो जाए कि उस ने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर ली है।

(आयतुल्लाह सीस्तानी)

जितने रोज़ों की क़ज़ा का यक़ीन है उतने ही रख ले तो काफ़ी है।

(आयतुल्लाह ख़ामेनई)

सवाल-15 अगर किसी का बड़ा बेटा न हो बल्कि बेटी बड़ी हो तो क्या उस बेटी पर माँ-बाप के रोज़ों की क़ज़ा वाजिब है ?

(आयतुल्लाह ख़ामेनई और आयतुल्लाह सीस्तानी के फ़तवों के मुताबिक़)

احکام

जवाबः वाजिब नहीं है।

सवाल-16 अगर कोई बिना किसी वजह के रोज़ा न रखे या रोज़ा रख कर जानबूझ कर कोई ऐसा काम कर ले जिस से रोज़ा टूट जाता है तो उसके लिए क्या हुक्म है ?

जवाबः उस दिन के रोज़े की क़ज़ा करेगा और कफ़्फ़ारा भी देगा यानी या तो 60 रोज़े रखेगा या साठ फ़क़ीरों को पेट भर खाना खिलाएगा।

सवाल-17 जिस पर रमज़ान के रोज़ों की क़ज़ा हो लेकिन वह जानबूझ कर अगले रमज़ान तक क़ज़ा रोज़े न रखे तो उसके लिए क्या हुक्म है ?

जवाबः उसे रोज़ों की क़ज़ा के साथ-साथ हर रोज़े के बदले एक मुद (750 ग्राम) अनाज भी फ़क़ीर को देना होगा।

सवाल-18 जिस पर कफ़्फ़ारा वाजिब हो जाए तो क्या उसके लिए ज़रूरी है कि रमज़ान ख़त्म होते ही फ़ौरन अदा करे ?

जवाबः फ़ौरन वाजिब नहीं है, बल्कि अगला रमज़ान आने से पहले किसी वक़्त भी अदा किया जा सकता है लेकिन जानबूझ कर सुस्ती नहीं करना चाहिए।

सवाल-19 फ़ितरा निकालना किस पर वाजिब है ?

जवाबः जो भी घर का ख़र्चा चलाता है उस पर अपने और उन सब लोगों की तरफ़ से फ़ितरा देना वाजिब है जिनका ख़र्चा वह चलाता है।

सवाल-20 मेहमान के फ़ितरे का क्या हुक्म है ?

जवाबः रमज़ान के आख़िरी दिन सूरज के डूबने से पहले अगर कोई मेहमान बन कर आया है, उसने खाया-पिया है और मेज़बान ने उसके लिए खाने-पीने और रुकने का इन्तेज़ाम किया है तो उसका फ़ितरा भी मेज़बान पर वाजिब होगा।

सवाल-21 अगर कोई थोड़ी देर के लिए सूरज डूबने से पहले या डूबने के बाद आए और कुछ खाए-पिये तो क्या उसका फ़ितरा भी वाजिब है ?

जवाबः थोड़ी देर के लिए आने वाले को या मुलाक़ात के लिए आने वाले को मेहमान नहीं कहा जाता। उसका फ़ितरा वाजिब नहीं है।

सवाल-22 जो बच्चा माँ के पेट में है और अभी पैदा नहीं हुआ है, क्या उसका फ़ितरा भी निकालना होगा ?

जवाबः जो बच्चा अभी दुनिया में नहीं आया है उसका फ़ितरा वाजिब नहीं है।

सवाल-23 अगर मेहमान या कोई दूसरा जिसका ख़र्चा किसी और पर वाजिब है, वह अपना फ़ितरा ख़ुद ही निकाल ले तो क्या यह सही है ?

जवाबः अगर ऐसा उस मेज़बान या उस आदमी की इजाज़त से किया गया है तो सही है, नहीं तो उनका फ़ितरा उस शख़्स को भी निकालना होगा।

सवाल-24 जो स्टूडेंट हॉस्टल में रहता है, उसका फ़ितरा किस पर वाजिब होगा ?

जवाबः अगर घर वाले उसका ख़र्चा देते हैं तो घर वालों पर वाजिब होगा। अगर अपना ख़र्चा ख़ुद उठाता है तो ख़ुद देगा।

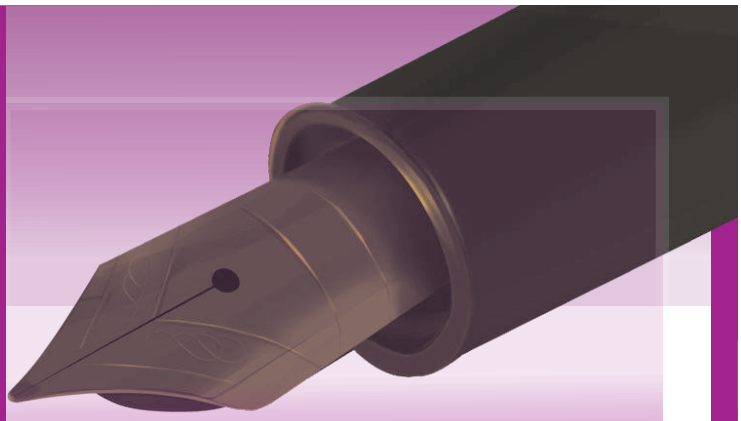

आप भी

मरयम

के लिए आर्टिकल भेज सकती हैं

1. A4 साइज़ पर लिखा हो।
2. पेपर के एक साईड पर लिखा हो।
3. पहले कहीं छपा न हो।
4. आर्टिकिल की ओरिजिनल कॉपी भेजिए।
5. भेजे गए आर्टिकिल्स एडिटोरियल बोर्ड से पास होने के बाद ही पब्लिश किए जाएंगे।
6. आर्टिकिल रिजेक्ट होने पर उसकी वापसी नहीं होगी।
7. आर्टिकिल सिलेक्ट हो जाने के बाद अपने मुनासिब वक़्त पर पब्लिश किया जाएगा।
8. आर्टिकिल में एडिटर को बदलाव का इख़्तियार होगा।
9. आर्टिकिल के साथ अपना पूरा एड्रेस और कांटेक्ट नम्बर ज़रूर भेजिए।

सै. अब्बास मूसवी

हज़रत अली[अ०] की ज़िन्दगी से कुछ बातें

हज़रत अली[अ०] की हुकूमत के ज़माने में एक बार उनकी ज़िरह (Armor) खो गई थी। ढूँढने पर एक ईसाई के पास मिली लेकिन उसका कहना था कि यह उसकी अपनी ज़िरह है। हज़रत अली[अ०] केस अदालत में लेकर चले गये और उसके ख़िलाफ़ शिकायत की। जब उस आदमी से ज़िरह के बारे में पूछा गया तो उसने कहा, ''अली[अ०] ख़लीफ़ा हैं, मैं उनकी बात झुठला नहीं सकता लेकिन सच यही है कि यह मेरी है।'' जज ने हज़रत अली[अ०] से कहा, ''आपने दावा किया है कि ज़िरह आपकी है इसलिए आपको अपनी बात साबित करने के लिए कोई सुबूत या गवाह पेश करना होगा।'' हज़रत अली[अ०] ने कहा, ''आपकी बात सही है कि मुझे सुबूत या गवाह पेश करना चाहिए लेकिन मेरे पास कोई गवाह नहीं है।''

जज ने उस ईसाई के हक़ में फ़ैसला सुना दिया और अदालत बरख़्वास्त कर दी गई।

अदालत में हज़रत अली[अ०] अपने केस को साबित नहीं कर सके थे लेकिन वह ईसाई अच्छी से तरह जानता था कि ज़िरह उसकी नहीं है बल्कि हज़रत अली[अ०] की ही है। उसके दिल ने गवाही दी कि हुकूमत का यह तरीक़ा और इस तरह इंसाफ़ का फ़ैसला आम इन्सान के बस में नहीं है। यह हुकूमत तो अल्लाह के नबियों की हुकूमतों जैसी है। उसने वहीं हज़रत अली[अ०] को ज़िहर दे दी और सबके सामने मान लिया कि ज़िरह उसकी नहीं है। फिर कुछ वक़्त के बाद वह मुसलमान भी हो गया और उसने नहरवान की जंग में हज़रत अली[अ०] की फ़ौज में शामिल होकर ख़वारिज के ख़िलाफ़ जंग भी की थी।

मूसा बिन ईसा अंसारी कहते हैंः अस्र की नमाज़ के बाद मैं और हज़रत अली[अ०] साथ बैठे हुए थे। इतने में एक आदमी आया और सलाम करने के बाद उसने हज़रत अली[अ०] से कहा, ''मुझे आपकी मदद चाहिए।''

हज़रत अली[अ०] ने पूछा, ''क्या मदद कर सकता हूँ ?''

वह कहने लगा, ''मैं किराये के घर में रहता हूँ। मेरे घर का मालिक मेरा पड़ोसी है। उसके घर में खजूर का पेड़ लगा है। उस पेड़ की खजूरें हवा की वजह से या परिन्दों की वजह से हमारे आँगन में गिर जाती हैं जिन्हें हम उठाकर खा लेते हैं। मैं चाहता हूँ कि आप हमारे पड़ोसी के पास चल कर हमारी तरफ़ से सिफ़ारिश कर दीजिए कि वह हमें माफ़ कर दे।''

मूसा कहता हैः हज़रत अली[अ०] ने मुझ से कहा,

''चलो साथ चलते हैं।''

जब हम उसके घर गये और उसे बताया कि हम इसलिए आए हैं ताकि तुम अपने पड़ोसी को माफ़ कर दो तो उसने इनकार कर दिया। हज़रत अली[अ०] ने उस से कहा, ''अगर मैं पैग़म्बरे ख़ुदा[स०] से इसके बदले में तुम्हारे लिए जन्नत में एक बाग़ की गारन्टी लेकर दूँ तो क्या माफ़ कर दोगे?'' उसने फिर भी मना कर दिया।

हज़रत अली[अ०] ने कहा, ''अपना घर मेरे फुलाँ बाग़ के बदले बेचोगे?''

उसने कहा, ''मुझे सौदा मन्ज़ूर है।'' जब सौदा हो गया तो हज़रत अली[अ०] ने वह घर उसके पड़ोसी को दे दिया ताकि वह बग़ैर किसी परेशानी के उसमें रह सके।

अगले दिन अल्लाह के रसूल[स०] ने मस्जिद में अपने साथियों से पूछा, ''तुम में से किसी सहाबी ने कल एक अच्छा काम किया है, वह ख़ुद बताएगा या मैं बताऊँ?'' सहाबियों ने कहा, ''अल्लाह के रसूल[स०] आप ही बता दीजिए।''

अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमाया, ''जिबरईल ने अभी मुझे बताया कि कल रात अली[अ०] ने एक अच्छा काम किया है जिसके लिए ख़ुदा ने यह सूरह भेजा है।''

بسم الله الرحمن الرحيم و الليل اذا يغشى ---

तब अल्लाह के रसूल[स०] ने हज़रत अली[अ०] से पूछा, ''क्या कल तुम ने अपना बाग़ बेच कर एक घर का सौदा किया है और अपना बाग़ किसी आदमी को दिया है?''

हज़रत अली[अ०] ने कहा, ''जी हाँ अल्लाह के रसूल।''

पैग़म्बर[स०] ने फ़रमाया, ''यह पूरा सूरह तुम्हारे बारे में ही उतरा है।''

एक बार हज़रत अली[अ०] अला इब्ने ज़ियाद हारसी को देखने गये। जब आपने अला का बड़ा सा घर देखा तो फ़रमाया, ''दुनिया में तुम्हें इतने बड़े घर की क्या ज़रूरत है? जबकि तुम्हें तो आख़िरत में बड़े घर की ज़रूरत होगी। अगर आख़िरत में बड़ा घर पाना चाहते हो तो यहाँ मेहमानों की ख़िदमत करो, रिश्तेदारों के साथ अच्छा बर्ताव करो और सब का हक़ अदा करो।''

अला ने कहा, ''मौला! मैं अपने भाई आसिम की शिकायत आप से करना चाहता हूँ।''

इमाम ने पूछा, ''क्या शिकायत है?''

अला ने कहा, ''उसने अपने बीवी-बच्चों और घर को छोड़ दिया है और कहता है कि दुनिया से दूर रहना चाहता हूँ।''

इमाम[अ०] ने अला के भाई को बुलवाया और डाँटते हुए कहा, ''अपने दुश्मन क्यों बन रहे हो? यह सब शैतानी सोच है। जिन चीज़ों को ख़ुदा ने हलाल किया है तुम उन से दूर रह कर अल्लाह वाला बनना चाहते हो?''

आसिम ने कहा, ''आप भी तो खुरदुरे कपड़े पहनते हैं और सादा खाना खाते हैं?''

इमाम अली[अ०] ने फ़रमाया, ''मैं तुम लोगों जैसा नहीं हूँ। ख़ुदा ने हुकूमत करने वालों पर वाजिब किया है कि समाज के सबसे ग़रीब लोगों की तरह रहें ताकि उन लोगों के लिए ज़िन्दगी गुज़ारना आसान हो।''

आप ग़ौर कीजिए! इमाम अली[अ०] ने अला को ज़रूरत से ज़्यादा बड़ा घर न होने की नसीहत की और वहीं उसके भाई को दुनिया से भागने पर टोका।

इसका मतलब यह है कि इस्लाम हम से एक बैलेंस्ड लाइफ़ चाहता है यानी इन्सान ख़ुदा की हलाल की हुई चीज़ों का ज़रूरत भर इस्तेमाल करे और आख़िरत को बनाने की कोशिश करे।

वह ईसाई था। मेहनत करता था और दो वक़्त की रोटी खाता था। बूढ़ा हो चुका था और उसकी आँखों की रौशनी भी जा चुकी थी। उसने ज़िन्दगी में जो भी कमाया था ख़र्च करता रहा और कभी कुछ नहीं बचाया था। इसलिए अब ख़ाली हाथ था। अब उसके पास एक ही रास्ता था। गली के एक कोने में खड़े होकर भीख माँगता था।

एक दिन हज़रत अली[अ०] वहाँ से गुज़रे और उसे देखा। हज़रत अली[अ०] ने उसके बारे में पूछा कि यह क्यों भीख माँग

रहा है ? क्या इसका कोई बेटा नहीं है जो इसकी देखभाल कर सके ? क्या इसके पास भीख माँगने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है जिस से इज़्ज़त के साथ उम्र के इस आख़िरी पड़ाव में खा-पी सके और ज़िन्दगी बिता सके।

लोगों ने बताया कि वह ईसाई है। जवान था तो मेहनत करता था लेकिन अब बूढ़ा हो गया है और आँखों से अन्धा भी। इसका कोई नहीं और ख़ुद भी कोई काम नहीं कर सकता। उसके पास पैसा भी नहीं है।

हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया, ''ताज्जुब है! जब तक यह काम और मेहनत कर सकता था तो लोग इस से काम करवाते रहे और अब जब इस में ताक़त नहीं रही है और काम नहीं कर सकता तो इसे इसके हाल पर छोड़ दिया गया है। इसलिए अब समाज और हुकूमत की ज़िम्मेदारी है कि इसका ख़र्चा उठाए।

एक बार हिशाम इब्ने अब्दुल मलिक अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में हज के मौसम में मक्का आया।

उसने हुक्म दिया कि किसी ऐसे आदमी को लाया जाए जिसने अल्लाह के रसूल[स०] का ज़माना देखा हो। मैं उस से उस ज़माने के हालात जानना चाहता हूँ।

उस से कहा गयाः रसूल[स०] के ज़माने का कोई भी सहाबी नहीं बचा है, सब गुज़र चुके हैं। उसने कहा, ''तो फिर किसी ताबई (जिसने सहाबियों को देखा हो) को लाया जाए।''

बादशाह के कहने पर ताऊस यमानी को उसके पास लाया गया।

जब ताऊस हाकिम के पास पहुँचे तो उन्होंने हिशाम के सामने क़ालीन पर ही अपने जूते उतार दिये और उसे दूसरे लोगों की तरह ''अमीरुलमोमिनीन'' कह कर सलाम करने के बजाए सीधे ''अस्सलामु अलैक'' कह कर सलाम किया।

इसके अलावा उन्होंने हिशाम से बैठने की इजाज़त भी नहीं माँगी बल्कि उस से पूछे बिना ही उसके सामने बैठ गये। सबसे बड़ी बात यह कि उन्होंने जब हिशाम से उसकी ख़ैरियत पूछी तो बादशाह, ख़लीफ़ा या किसी भी तरह का एहतेराम करने के बजाए उस से पूछा, ''हिशाम! कैसे हो ?''

ताऊस यमानी का यह बर्ताव देख कर हिशाम को बहुत ग़ुस्सा आया और उसने कहा, ''यह सब क्या है, मेरे साथ ऐसा बर्ताव क्यों कर रहे हो ?''

''मैंने क्या किया ?'' ताऊस यमानी ने पूछा।

''क्या किया ? मेरे सामने जूते क्यों उतारे ? मुझे अमीरुल मोमिनीन कह कर सलाम क्यों नहीं किया ? मुझ से पूछे बग़ैर बैठ क्यों गये ? और इस तरह बेएहतेरामी के साथ मेरी ख़ैरियत क्यों पूछी ?''

ताऊस यमानी ने जवाब दिया, ''तुम्हारे सामने जूते इसलिए उतारे क्योंकि मैं रोज़ पाँच बार ख़ुदा के सामने जाता हूँ तो जहाँ खड़ा हो जाता हूँ वहीं जूते उतारता हूँ, वह कभी ग़ुस्सा नहीं करता, जबकि वह तो सबसे बड़ा है।''

''और तुम्हें अमीरुलमोमिनीन इसलिए नहीं का क्योंकि तुम सच में सभी मोमिनीन के सरदार थे ही नहीं, बहुत से मोमिनीन तुम से और तुम्हारी हुकूमत से नाराज़ हैं।''

''तुम्हारा नाम क्यों लिया ? इसकी वजह यह है कि ख़ुदा अपने पैग़म्बरों को क़ुरआन में उनके नामों से पुकारता हैः या दाऊद, या यह्या, या ईसा और यह पैग़म्बरों की तौहीन नहीं है। लेकिन अबू लहब का ज़िक्र ख़ुदा ने उसके नाम के बजाए उसकी कुन्नियत से किया है, और यह उसके एहतेराम की दलील नहीं है।''

''और तुम से इजाज़त लिये बग़ैर इसलिए बैठा क्योंकि मैंने हज़रत अली[अ०] को यह कहते हुए सुना हैः अगर किसी जहन्नमी को देखना चाहते हो तो ऐसे आदमी को देखो जो

ख़ुद बैठा हो और लोग उसके चारों तरफ़ खड़े हों।''

ताऊस का जवाब सुन कर हिशाम कुछ कह नहीं सका, इसलिए उसने कहा, ''मुझे कोई नसीहत करो।''

ताऊस ने कहा, ''मैंने अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली[अ०] से सुना हैः जहन्नम में बड़े-बड़े साँप और बिच्छू हैं जिन्हें उन बादशाहों को डसने के लिए रखा गया है जो लोगों के साथ इंसाफ़ नहीं करते।

एक आदमी मेहमान बन कर हज़रत अली[अ०] के पास आया। कुछ दिन मेहमान बन कर रहा लेकिन वह सच में मेहमान बन कर नहीं आया था। दिल में कुछ ख़ास बात छुपाए हुए था जिसने उसने शुरु में नहीं बताया था। असल बात यह थी कि उसका किसी से झगड़ा हो गया था और वह चाहता था कि वह आदमी जिस से उसका झगड़ा हुआ है वह भी हज़रत अली[अ०] के पास आए और हज़रत अली[अ०] ही उसका फ़ैसला करें।

एक दिन उसने हज़रत अली[अ०] के सामने अपना राज़ बयान कर ही दिया।

हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया, ''इसका मतलब तुम मेरे मेहमान नहीं बल्कि अपना झगड़ा निपटाने आए हो?''

बोला, ''जी हाँ! ऐसा ही है।''

हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया, ''आज से तुम मेरे मेहमान नहीं हो और मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता क्योंकि हमारे नबी[स०] ने फ़रमाया हैः जब दो लोगों के बीच झगड़ा हो और जज के सामने फ़ैसले के लिए लाया जाए तो जज को यह हक़ नहीं है कि वह उन दोनों में से किसी एक को अपना मेहमान बनाए। हाँ! अगर दोनों हों तो कोई हरज नहीं है।''

हज़रत अली[अ०] घोड़े पर सवार अपनी फ़ौज के साथ नहरवान की तरफ़ जा रहे थे। रास्ते में एक फ़ौजी किसी को अपने साथ लाया और कहने लगा, ''ऐ अमीरुलमोमिनीन! यह सितारों का इल्म रखने वाला (Astronomer) है और कुछ कहना चाहता है।''

सितारों का इल्म रखने वाले उस आदमी ने कहा, ''ऐ अमीरुलमोमिनीन! इस वक़्त जंग के लिए न जाईये, बल्कि कुछ घंटे रुकने के बाद जाईयेगा।''

''क्यों?''

''क्योंकि सितारे बता रहे हैं कि जो भी इस वक़्त जंग के लिए निकलेगा वह अपने दुश्मन से हार जाएगा। उसका और उसके साथियों का बहुत ज़्यादा नुक़सान होगा लेकिन जो वक़्त मैं बता रहा हूँ अगर आप उस वक़्त जाएंगे तो कामयाबी आप ही के क़दम चूमेगी।''

हज़रत अली[अ०] ने कहा, ''इस घोड़े के पेट में बच्चा है, क्या तुम बता सकते हो कि यह घोड़ा है या घोड़ी?''

कहने लगा, ''अगर मैं बैठ कर सोचूँ और अन्दाज़ा लगाऊँ तो बता सकता हूँ।''

हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया, ''तुम झूठ बोलते हो। ख़ुदा के अलावा कोई नहीं बता सकता कि जो उसने पैदा किया है वह क्या है?

जो दावा तुम कर रहे हो, ऐसा दावा अल्लाह के रसूल[स०] ने भी नहीं किया। क्या तुम्हारा यह दावा है कि दुनिया में जो हो रहा है या होने वाला है उसके बारे में तुम जानते हो?

क्या तुम जानते हो कि किस घड़ी में अच्छा होने वाला है और किस घड़ी में बुरा?''

इसके बाद आपने लोगों से कहा, ''ऐसे लोगों की बातों में न आओ क्योंकि यह आदमी आगे आने वाले दिनों के बारे में जानकारी और ग़ैब के इल्म का दावा कर रहा है। ऐसा दावा करने वाला जादूगर की तरह है और जादूगर कुफ़्फ़ार की लाइन में है और कुफ़्फ़ार का ठिकाना जहन्नम है।''

फिर आप ने हाथ उठाकर कुछ दुआएं कीं और उस आदमी से कहा, ''हम तुम्हारी बात का उलटा करेंगे और इसी वक़्त निकलेंगे।''

फिर हज़रत अली[अ०] उसी वक़्त निकले और कामयाब भी हुए बल्कि आपको ऐसी कामयाबी मिली जैसी उस से पहले कभी नहीं मिली थी। ●

■ डॉक्टर मरयम अब्दुल बाक़ी

बच्चे और रमज़ानुल मुबारक के रोज़े

कुछ लोगों का मानना है कि बच्चों को बचपन से दीन सिखाना या दीन पर अमल करवाना ज़रूरी नहीं है। जब वह बड़े और बालिग़ होंगे तो ख़ुद ही सीख भी लेंगे और अमल भी करने लगेंगे। यह लोग यह भी कहते हैं कि बालिग़ होने से पहले बच्चों से रोज़े नहीं रखवाना चाहिएं। इन लोगों की दलील यह है कि अगर ज़रूरी होता तो ख़ुदा बालिग़ होने से पहले ही बच्चों पर रोज़ा वाजिब कर देता। लेकिन जब हम अहलेबैत[अ०] की ज़िन्दगी, उनकी सीरत और हदीसों में देखते हैं तो हमें नज़र आता है कि अहलेबैत[अ०] बच्चों के बालिग़ होने से पहले बचपन में ही बच्चों को दीन सिखाने पर ज़ोर देते थे और उन्हें नमाज़ और रोज़े जैसी वाजिब चीज़ों पर अमल करने की प्रेक्टिस करवाते थे। इसकी वजह यह है कि बचपन में इन्सान जो कुछ सीखता है वह पत्थर पर लिखे जाने जैसा होता है।

बच्चों और नौजवानों को रोज़े की आदत डलवाने के लिए ज़रूरी है कि उन्हें धीरे-धीरे इन बातों की प्रेक्टिस करवाई जाए ताकि उनके लिए रोज़ा रखना आसान हो जाए। इसलिए किसी भी तरह की सख़्ती बच्चे को नुक़सान पहुँचा सकती है और उसे रोज़े और रमज़ान से दूर कर सकती है।

जब बच्चा सात साल का हो जाए

एक सवाल यह उठता है कि बच्चे को कब से नमाज़ और रोज़े की प्रेक्टिस करवाई जाए ?

इसके बारे में हमारी किताबों में कुछ हदीसें मिलती हैं जैसे शैख़ कुलैनी की किताब ''अल-काफ़ी'' में एक हदीस है जिसमें इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] अपने साथियों से बच्चों की परवरिश और उन्हें दीन सिखाने के बारे में समझाते हुए फ़रमाते हैं, ''हम अपने बच्चों से पाँच साल की उम्र से ही नमाज़ पढ़वाते हैं लेकिन तुम लोग सात साल की उम्र से बच्चे को नमाज़ पढ़वाया करो। हम अपने बच्चों को 7 साल की उम्र से रोज़ा रखवाते हैं लेकिन तुम उन्हें 9 साल की उम्र से रोज़ा रखवाया करो लेकिन बस उतना ही जितनी उनमें ताक़त है चाहे वह आधे दिन का रोज़ा हो, इस से कुछ कम या थोड़ा ज़्यादा। दिन में जब उन्हें ज़्यादा प्यास या भूख लगे तो उन्हें कुछ खिला-पिला दो।''

इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] की इस हदीस से समझ में आता है कि बच्चों पर रोज़ा रखने के मामले में सख़्ती नहीं करना चाहिए बल्कि धीरे-धीरे उनको यह आदत डलवाना चाहिए। अब सवाल यह है कि इसके लिए क्या किया जाए कि वक़्त गुज़रने के साथ-साथ बच्चों में इन कामों की आदत पड़ जाए ?

बच्चों की रूह

सबसे पहले हमें इस बात की तरफ़ ध्यान देना चाहिए कि हर बच्चे और नौजवान की रूह सीखने-समझने के लिए बड़ों से ज़्यादा तैयार होती है और उस में दीन के अहकाम को सीखने और उनकी प्रेक्टिस करने की सलाहियत दूसरों से ज़्यादा होती है। अगर रोज़े की बात की जाए तो बचपन में रोज़े की

प्रेक्टिस करना ज़्यादा आसान है। उम्र जितनी बढ़ती जाती है रूह उतनी ही दुनिया के बन्धनों में फंसती जाती है और नई बातों को सीखने और उनकी प्रेक्टिस के लिए कठिनाई बढ़ती जाती है। ठीक है कि रोज़ा रखना बच्चों के लिए वाजिब नहीं है लेकिन अगर वह दिन में कुछ खाते-पीते नहीं हैं और उन कामों से बचते हैं जिन से रोज़ा टूट जाता है तो अपने आप में ख़ुद यह काम बहुत अच्छा है। इस उम्र में बच्चों के अन्दर ईमान और तक़वे को मज़बूत करने में इस काम का बहुत बड़ा रोल हो सकता है।

इसमें कोई शक नहीं कि रोज़ा लड़कियों पर 9 साल की उम्र में और लड़कों पर 15 साल की उम्र में वाजिब होता है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इस से पहले हम उन्हें बिल्कुल आज़ाद छोड़ दें। फिर जब वह बालिग़ हो जाएं तो एक दम से उनके सर पर सवार हो जाएं और उन्हें रोज़ा रखने पर मजबूर करें बल्कि बालिग़ होने से पहले ही उन्हें प्रेक्टिस करवाईये जैसे सहर के टाइम और इफ़्तारी के वक़्त उन्हें अपने साथ बिठाईये और रमज़ान के इन ख़ास पलों में उन्हें इस रूहानी माहौल से दिल लगाने दीजिए।

बच्चों के लिए आइडियल बनिये

अगर हम चाहते हैं कि हमारा बेटा या बेटी बचपन से रोज़े और रमज़ान के आदाब सीखे और बचपन से ही उस तक़वे को महसूस करे जो रोज़ा रखने का मक़सद है, तो हमें अपने आप को उनका बेहतरीन आइडियल बनाना होगा क्योंकि बच्चों को रोज़े की अहमियत सिर्फ़ लफ़्ज़ों में नहीं समझाई जा सकती।

बच्चा उसी वक़्त रोज़े और रमज़ान की अहमियत को समझेगा जब यह चीज़ माँ-बाप के किरदार और उनके अमल से भी झलकेगी। जब बाप दिन में गर्मी होते हुए भी काम पर जाता है, खाने-पीने से दूर रहता है, शाम को थका हुआ घर आता है और भूख-प्यास की शिकायत करने के बजाए रोज़े के रूहानी फ़ायदों और रमज़ानुल मुबारक की बरकतों की बात करता है और इस तौफ़ीक़ के लिए ख़ुदा का शुक्र अदा भी करता है तो बच्चे अपने आप रोज़े की अहमियत को समझने लगते हैं।

जब माँ-बाप सहर और इफ़्तार के वक़्त बच्चों को अपने साथ बिठाते हैं तो बच्चे इस रूहानी माहौल को और इसके मज़े को अच्छी तरह महसूस करते हैं, इस लिए दीनी कामों और ख़ास कर इबादत में माँ-बाप का बच्चों के लिए बेहतरीन आइडियल बनना बहुत ज़रूरी है।

बच्चों को जब सहरी के वक़्त जगाया जाता है तो उन्हें सबके साथ सहरी के लिए उठना बहुत अच्छा लगता है। इसी तरह इफ़्तार में उन्हें भी अपने साथ बिठाया जाए। सेहरी और इफ़्तार के वक़्त उन्हें दूर नहीं भगाना चाहिए। बच्चों की इस चाहत से फ़ायदा उठाना चाहिए और उन्हें इन रूहानी पलों में ख़ुदा से और दीन से क़रीब करने की कोशिश करना चाहिए। रमज़ानुल मुबारक का यह ख़ास टाइम बच्चों की पर्सनॉलिटी पर बहुत ज़्यादा असर डालता है।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं, ''लोगों को अपने अमल के ज़रिये दीन और हक़ की तरफ़ बुलाओ, ज़बान के ज़रिये नहीं।''

साइकॉलोजी के जानकारों का मानना है कि बच्चा माँ-बाप के एक-एक काम को नोट करता है और अपने दिमाग़ में उन कामों की पिक्चर बनाकर रखता जाता है। वह जो भी देखता है उसे अच्छी तरह समझता है। फिर वही करता है जो उसने देखा होता है।

इसलिए अगर माँ-बाप और बड़े अपने अमल से रोज़े की अहमियत और उसकी बरकत बच्चे को समझाएंगे तो रोज़ा उसके लिए ज़िन्दगी का एक बेहतरीन तजुर्बा होगा।

ज़बरदस्ती न कीजिए

किसी भी काम के लिए ख़ासकर किसी भी दीनी काम और इबादत के लिए बच्चों को मजबूर न कीजिए। अगर आपका बेटा या बेटी जवान और बालिग़ हो चुके हैं तो उन्हें नमाज़ और रोज़ा रखने के लिए मजबूर न कीजिए और उनके साथ ज़बरदस्ती न कीजिए। इसका नुक़सान यह होगा कि उसके अन्दर दीन और इबादत का न सिर्फ़ शौक़ जन्म नहीं लेगा बल्कि वह दीन और इबादत से ही दूर हो जाएगा। अगर हम उसके साथ ज़बरदस्ती करेंगे तो हमारे सामने तो नमाज़ पढ़ लेगा लेकिन बाहर नहीं पढ़ेगा, हमारे सामने रोज़े की एक्टिंग भी कर लेगा लेकिन बाहर जाकर कुछ न कुछ खा लेगा।

इसका बेहतरीन तरीक़ा अल्लाह के रसूल[स०] की ज़िंदगी में मिलता है। आप लोगों के अन्दर इबादत और नेक कामों का शौक़ पैदा करते थे और लोग उस शौक़ की वजह से ही सारे काम करते थे। अगर अल्लाह के

तौबा

से ज़्यादा आसान रास्ता

''परहेज़, इलाज से बेहतर होता है'' यह फ़ार्मूला अख़लाक़ और परवरिश के बारे में भी 100% सही है। अगर कोई बेधियानी या अपनी सेहत का ख़याल न रखने की वजह से किसी बीमारी का शिकार हो गया है तो उसका हल यह है कि वह किसी डॉक्टर के पास जाए लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि इलाज काफ़ी मेंहगा और भारी ख़र्चे वाला होता है और कभी यह भी हो सकता है कि बीमारी के ख़त्म होने के बाद उस इलाज का कोई साइड इफ़ेक्ट सामने आ जाए जो उम्र भर बाक़ी रहे। इसलिए ऐसे हालात में सब से अच्छा तरीक़ा और सब से अच्छा इलाज परहेज़ और डॉक्टर के बताए उसूलों की पाबंदी करना है जिसमें सहूलत और ख़र्चा कम होने के साथ कोई नुक़सान और रिएक्शन भी नहीं होता।

यह बात सही है और इसमें कोई शक भी नहीं है कि हमारे पालने वाले ने अपने गुनाहगार बन्दों के लिए सारे रास्ते बन्द नहीं किए हैं यानी ऐसा नहीं है कि अगर इंसान गुनाह कर बैठे तो बस अब सब कुछ ख़त्म बल्कि तौबा के नाम का एक दरवाज़ा हर वक़्त खुला रखा है, जिसका जब दिल चाहे तौबा कर सकता है। लेकिन क्या सारे गुनाहगार इंसानों को इस बात का ध्यान है कि जो उन्होंने बुराईयाँ और ग़लतियाँ की हैं उन से उन्हें तौबा कर लेना चाहिए ?

क्या शैतान उन्हें इतनी आसानी से छोड़ देगा कि वह उसके चंगुल से आज़ाद हो जाएं और दोबारा उसके जाल में न फंसें ?!

और अगर उन्होंने तौबा कर भी ली तो क्या उनकी तौबा में इतना दम होगा जो उनके सारे गुनाहों को साफ़ कर दे ?!

सब से बड़ा सवाल यह है कि अगर तौबा की तौफ़ीक़ ही नहीं मिल सकी तो फिर क्या होगा ?!

यही वह बातें हैं जिनकी वजह से कहा जाता है कि परहेज़ करना इलाज से अच्छा और ज़्यादा आसान है, यानी इन्सान सिरे से गुनाह ही न करे।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

''गुनाह को छोड़ देना बाद में मदद माँगने से आसान है।''[1]

जो चीज़ इस बारे में इन्सान को हिम्मत और ताक़त देती है वह है इन्सान का अपने ऊपर कंट्रोल पाना और अपनी ख़्वाहिशों पर क़ाबू पाना।

इन्सान को चाहिए कि अपना कंट्रोल अपने हाथ में रखे और अपने दिल को ख़ुदा की इताअत की तरफ़ मोड़ दे, न यह कि अपनी ख़्वाहिशों पर सवार होकर अंधाधुंध जिधर चाहे मुंह उठाए चला जाए। हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

''वह इन्सान जिसे एक ख़ास वक़्त तक उम्र दी गई है और अमल करने के लिए छूट भी मिली है, उसे अल्लाह से डरना चाहिए। मर्द वह है जो अपने नफ़्स को लगाम देकर और उसकी बागें चढ़ाकर अपने क़ाबू में रखे और लगाम के ज़रिए उसे अल्लाह की नाफ़रमानियों से रोके और उसकी बागें थाम कर अल्लाह की इताअत की तरफ़ उसे खींच ले जाए।''[2]

यही वह रास्ता है जिस पर चलकर यानी अपने दिल को कन्ट्रोल करके गुनाहों से बचा जा सकता है ताकि तौबा की नौबत ही न आए। और यह काम बहुत आसान भी है यानी ऐसा किया जा सकता है।

1- नहजुल बलाग़ा, हिकमत/170
2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा/234

रसूल[स०] सख़्ती और ज़बरदस्ती करते तो कोई भी उनकी बताई हुई बातों और दीन पर अमल न करता।

माँ-बाप भी घर में ऐसा माहौल बनाएं कि बच्चों के अन्दर इबादत, नमाज़ और रोज़े का शौक़ पैदा हो। इस मामले में हम बच्चों के साथ जितनी नर्मी, मेहरबानी और हमदर्दी से पेश आएंगे उतनी जल्दी बच्चों पर हमारी बातों और अमल का असर होगा।

आधा रोज़ा

कुछ लोग कहते हैं कि बच्चे से रोज़ा रखवाने के बाद दिन ही में उन से इफ़्तार करने को कहना रोज़े के साथ एक मज़ाक़ है। ऐसा बिल्कुल नहीं है। यह न सिर्फ़ मज़ाक़ नहीं है बल्कि यह ख़ुद दीन सिखाने का एक तरीक़ा है जिसकी तरफ़ इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] की हदीस में भी इशारा हुआ है जिसे हम ने आर्टिकिल के शुरु में ज़िक्र किया है। इसके अलावा इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की एक दूसरी हदीस भी इसी हदीस से मिलती-जुलती है जिसमें इमाम फ़रमाते हैं, ''हम बच्चों को सहरी में जगाते हैं ताकि वह भी रोज़े की नियत करें और रोज़ा रखें। फिर दिन में जब चाहें इफ़्तार कर लें।''

लेकिन जो बच्चे उम्र में थोड़ा बड़े हैं जैसे 12 साल की उम्र के लड़के या 8 साल की लड़कियाँ, उन से कहा जाए कि भूख या प्यास लगने पर थोड़ा सा खा लें या थोड़ा पानी पी लें और कोशिश करें कि इसके अलावा दिन भर कुछ न खाएं। साथ ही उन्हें यह भी सिखाया जाए कि रोज़ा सिर्फ़ खाना न खाने और पानी न पीने का नाम नहीं है कि बल्कि ज़बान पर कन्ट्रोल करना, दूसरों को तकलीफ़ न पहुँचाना, ख़ुदा से दुआ करना, दूसरों की मदद करना, अच्छे कामों के बारे में सोचना भी रोज़े में शामिल है और यही रोज़े को असली रोज़ा बनाता है।

आख़री बात

माँ-बाप इस बात का पूरा ध्यान रखें कि जो बच्चे रोज़ा रखना चाहते हैं, ख़ासतौर पर जो पूरा रोज़ा रखना चाहते हैं उन्हें सहरी में ऐसी चीज़ें खिलाई जाएं जो उनके जिस्म को एनर्जी पहुँचाएं। इसके अलावा कोशिश कीजिए कि बच्चा दिन में कुछ देर के लिए सो जाए। यह भी कोशिश कीजिए कि जिस दिन उसने रोज़ा रखा है उस दिन वह खेल-कूद से दूर रहे क्योंकि इस से जिस्म का पानी कम होता है और प्यास ज़्यादा लगती है जिस से बच्चे को मुश्किल हो सकती है।

दीनदार बच्चे

अपने बच्चों को दीनदार बनाइए
क्योंकि दीनदार बच्चों से ही एक अच्छा समाज बन सकता है।

(सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामेनई)

अल्लाह
हर हिसाब से एक है

■ आयतुल्लाह जाफ़र सुब्हानी

ख़ुदा के वुजूद पर यानी ख़ुदा के होने पर ईमान सभी आसमानी शरीअतों के मानने वालों के बीच एक कॉमन अक़ीदा है। एक ख़ुदा को मानने वाले और मैटेरियलिस्ट सोच रखने वाले इन्सान के बीच बुनियादी फ़र्क़ भी यही है। क़ुरआन की नज़र में ख़ुदा का वुजूद एक ऐसा मामला है जिसे समझाने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह बात हर एक की समझ में अपने आप आ जाती है। क़ुरआन की नज़र में ख़ुदा का वुजूद सूरज की तरह इतना क्लियर है कि इसके बारे में किसी शक की कोई जगह नहीं है। क़ुरआन फ़रमाता है, ''क्या ख़ुदा के बारे में भी कोई शक किया जा सकता है जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है।''[1]

ख़ुदा का वुजूद इतना क्लियर होने के बाद भी जो लोग सुबूत और अक़्ल से ख़ुदा के वुजूद को जानना और समझना चाहते हैं और अपने शक को दूर करना चाहते हैं, उनके लिए क़ुरआन कहता है:

1- क्या इन्सान को किसी एक ऐसी बड़ी ताक़त की ज़रूरत समझ में नहीं आती है जिस से वह कठिनाईयों और सख़्तियों में मदद माँगता है और सिर्फ़ उसी से उम्मीदें लगाता है? जब इंसान की हर जगह से उम्मीद टूट जाती है और वह बिल्कुल बेबस हो जाता है तो क्या ऐसे हालात में उसके अन्दर से यह आवाज़ नहीं आती है कि अभी कोई न कोई ज़रूर है जो उसकी मदद कर सकता है। ऐसे हालात में उसके दिल से एक ऐसी आवाज़ ज़रूर आती है और फिर वह उस हस्ती को महसूस भी करता है। यह वही उसके अंदर से उठने वाली आवाज़ है जो उसका ध्यान उसके पैदा करने वाले की तरफ़ मोड़ती है। क़ुरआन फ़रमाता है, ''अपना चेहरा ख़ुदा की तरफ़ मोड़ दो जिसने लोगों को अपनी फ़ितरत के मुताबिक़ पैदा किया है।''[2]

जब इन्सान सख़्तियों और मुसीबतों में फंस जाता है तो इस हालत को बयान करते हुए क़ुरआन कहता है, ''जब वह कश्तियों में सवार होते हैं तो सच्चे दिल ख़ुदा को पुकारते हैं और जब निजात पाकर सही सलामत ज़मीन पर आ जाते हैं तो फिर से शिर्क करने लगते हैं।''[3]

सवाल यह है कि मुसीबत के वक़्त लोग दुआ क्यों करते हैं और किसे पुकारते हैं?

2- ख़ुदा के बारे में शक करने वाले इन्सान से क़ुरआन कहता है कि इस दुनिया और इस दुनिया में बिखरी हुई उसकी निशानियों के बारे में सोचो-समझो और इन चीज़ों के बारे में सोच-विचार करो। इन्सान जब इन सारी चीज़ों पर ध्यान देता है तो उसे पता चलता है कि इस पूरे सिस्टम के पीछे कोई न कोई ज़रूर है जिसके पास इल्म, ताक़त और अक़्ल सब कुछ है।

क्या वह इन्सान या कोई दूसरी ताक़त?

क़ुरआन फ़रमाता है: ''आसमानों और ज़मीन के पैदा करने और रात व दिन के एक-दूसरे के बाद आने-जाने में अक़्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं।''[4]

अगर इन्सान इन निशानियों पर ध्यान दे तो समझ सकता है कि इन्सान से बड़ी कोई दूसरी ताक़त ज़रूर है जिसने इस दुनिया को, इस दुनिया की सारी चीज़ों और हम सब को बनाया है।

तौहीद पर सबका ईमान

आसामनी किताबों पर ईमान रखने वाले सभी धर्मों का यह मानना है कि ख़ुदा एक है। इस मामले में सारे आसमानी धर्मों के मानने वाले एक हैं। हाँ! कुछ लोग ऐसे ज़रूर हैं जिन्होंने इस अक़ीदे के बारे में कुछ ऐसी बातें कही हैं जिनका इन आसमानी किताबों से कोई ताल्लुक़ नहीं है।

अब हम क़ुरआन, हदीस और अक़्ल की रौशनी में तौहीद के बारे में बात करेंगे।

वह एक है

ख़ुदा एक है जिसे हम ''अल्लाह'' कहते हैं। उसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं है। थियालोजी की ज़बान में

इसे ''ज़ाती तौहीद'' कहा जाता है।

इस बात के दो मतलब हैंः (1) एक यह कि वह एक है, अकेला है और दूसरा यह कि वह कई चीज़ों से मिल कर नहीं बना है।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैंः ''ख़ुदा हर हिसाब से एक है, उसे अपनी सोच में, अक़्ल में या कहीं भी टुकड़े-टुकड़े नहीं किया जा सकता।''

यानी यह नहीं कहा जा सकता कि ख़ुदा इन-इन चीज़ों से मिल कर बना है और यह इसके पार्ट्स हैं।

सूरए तौहीद में इस्लाम के इसी अक़ीदे को समझाया गया है। यह सूरा सिर्फ़ दो आयतों में सारी बात समझा देता हैः ''वह ख़ुदा एक है''[5] और ''उसका कोई साथी नहीं है''[6]।

इस लिए ईसाईयों में तीन ख़ुदाओं (ट्रिनिटी) का जो नज़रिया पाया जाता है वह इस्लाम के हिसाब से एक ग़लत अक़ीदा है। इसके ग़लत व बातिल होने पर उलमा ने अपनी किताबों में बहुत सारी बातें कही हैं और बहुत सारे सुबूत दिए हैं। हम यहाँ सिर्फ़ एक सुबूत पर बात कर रहे हैं।

जिन तीन ख़ुदाओं को ईसाई मानते हैं वह तीन ख़ुदा दो हालतों से बाहर नहीं हो सकतेः पहली हालत तो यह है कि या तो यह तीनों अलग-अलग हैं यानी इनमें से हर एक अलग ख़ुदा है। ऐसे में यह नज़रिया ''ज़ाती तौहीद'' से टकराएगा क्योंकि इस हालत में यह नहीं कहा जा सकता कि उस जैसा कोई नहीं है क्योंकि हर एक के लिए दूसरे दो ठीक उसी के जैसे मौजूद होंगे।

दूसरी हालत यह हो सकती कि यह तीनों ख़ुदा किसी एक ख़ुदा के अलग-अलग हिस्से हैं और तीनों मिल कर एक बनते हैं। ऐसे में हर एक दूसरे दो ख़ुदाओं का मोहताज होगा जबकि ख़ुदा किसी का मोहताज हो नहीं सकता।

सिफ़तों में एक

ख़ुदा की सारी सिफ़तें एक हैं। हमारा अक़ीदा है कि ख़ुदा के अन्दर हर कमाल पाया जाता है। क़ुरआन और अक़्ल दोनों यही बात कहते हैं। इसलिए ख़ुदा आलिम (जानने वाला), क़ादिर (सब कुछ करने की ताक़त रखने वाल), हई (ज़िन्दा), समीअ् (सुनने वाला), बसीर (देखने वाला) और दूसरे हर कमाल का मालिक है।

दिखने में तो उसकी हर सिफ़त एक-दूसरे से अलग है यानी आलिम से हम एक चीज़ समझते हैं, क़ादिर से कुछ और समझते हैं और इसी तरह हर सिफ़त एक अलग मतलब की तरफ़ इशारा करती है लेकिन क्या जिस तरह यह सिफ़तें देखने में अलग-अलग हैं क्या ख़ुदा के वुजूद में भी एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं, या एक हैं ?

अगर कोई यह समझता है कि यह सिफ़तें किसी पज़ल के टुकड़ों की तरह अलग-अलग हैं और इन सब से मिल कर एक ख़ुदा बनता है तो यह ग़लत है क्योंकि ख़ुदा की सिफ़तें ऐसी बिल्कुल नहीं हैं बल्कि ख़ुदा की सिफ़तें ज़ाहिरी तौर पर एक दूसरे से अलग होते भी हुए एक हैं।

उसका पूरा वुजूद इल्म है, उसका पूरा वुजूद ताक़त है, उसका पूरा वुजूद ज़िन्दगी है। इमाम सादिक़[अ०] फ़रमाते हैंः इल्म ख़ुदा की ज़ात है, उस से अलग कोई चीज़ नहीं है, सुनना उसकी ज़ात है उस से अलग कुछ नहीं, देखना उसकी ज़ात है उस से अलग कोई चीज़ नहीं।

बस वही एक पैदा करने वाला है

तौहीद की तीसरी क़िस्म यह है ख़ुदा ने इस दुनिया को और इस दुनिया में जो कुछ है सब को पैदा किया है। उसके अलावा कोई भी पैदा करने वाला नहीं है। किसी ने आज तक यह दावा नहीं किया कि दुनिया में कोई चीज़ ख़ुदा के अलावा किसी ने पैदा की है। क़ुरआन मजीद फ़रमाता है, ''कह दीजिए कि ख़ुदा ही हर चीज़ को पैदा करने वाला है, वह एक है, और क़हर करने वाला है।''[7] या फ़रमाता है, ''वह अल्लाह तुम्हारा रब है, हर चीज़ का पैदा करने वाला है, उसके अलावा किसी की इबादत नहीं की जा सकती।''[8]

अल्लाह को कुछ बनाने या पैदा करने के लिए किसी चीज़ या किसी भी आदमी की मदद की ज़रूरत नहीं है बल्कि कुछ बनाने के लिए उसका इरादा ही काफ़ी है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह किसी मैटिरियल का इस्तेमाल नहीं करता या किसी चीज़ को ज़रिया नहीं बनाता, बल्कि यह क़ानून भी उसी ने बनाया है कि वह किसी मैटिरियल के ज़रिये किसी चीज़ को या माँ-बाप के ज़रिये उनके बच्चे को इस दुनिया में पैदा करता है और उसे एक ख़ास प्रॉसेस से पैदा करता है। ध्यान रखने की बात यह है कि उसने यह क़ानून बनाया ज़रूर है और वह ऐसा करता ज़रूर है मगर यह सब करने में वह इस प्रॉसेस का या किसी भी चीज़ का मोहताज नहीं है जैसे उसने सबसे पहले इन्सान यानी हज़रत आदम[अ०] को बिना माँ-बाप के ही पैदा किया था या हज़रत ईसा[अ०] को बिना बाप के ही पैदा किया था। इसका सीधा सा मतलब यह है कि कि जो भी है सब कुछ सिर्फ़ और सिर्फ़ उसका इरादा है और सब कुछ बस उसके इरादे से होता है। वह जैसा चाहता है वैसा करता है।

दुनिया को भी वही चलाता है

दुनिया का सिस्टम और मैनेजमेन्ट उसी के हाथ में है। उसने पैदा किया है और वही रब है। उसके अलावा किसी का कोई असर नहीं है और अगर है भी तो उसकी इजाज़त से और उसके हुक्म से है। इन्सान के बनाए हुए कारख़ाने में बनाने वाले और चलाने वाले अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन ख़ुदा की बनाई

हुई दुनिया में बनाने वाला भी वही है और चलाने वाला भी वही है।

ख़ुदा पैदा करने वाला है जिसमें किसी को भी कोई शक नहीं है बल्कि जो शिर्क करते हैं वह भी ख़ुदा को ही पैदा करने वाला मानते हैं। झगड़ा अगर है तो इसमें है कि ठीक है कि दुनिया को अल्लाह ने बनाया है मगर दुनिया को चलाने वाला भी वही है या कोई दूसरा इस दुनिया को चला रहा है ?

इबादत में शिर्क भी यहीं से जन्म लेता है। हज़रत इब्राहीम[अ०] के ज़माने में सभी का मनना था कि पैदा करने वाला एक है लेकिन वह लोग सूरज, चाँद और सितारों को इस दुनिया को चलाने वाला मानते थे। हज़रत इब्राहीम[अ०] का उनके साथ झगड़ा इसी बात पर था कि तुम इन चीज़ों को अपना रब क्यों मानते हो।

हज़रत यूसुफ़[अ०] के ज़माने में भी शिर्क की वजह यही थी कि लोगों का मानना था कि ख़ुदा का काम बस पैदा करना है और बाक़ी काम उसने दूसरों को सौंप दिया है। हज़रत यूसुफ़[अ०] ने जेल में क़ैदियों से पूछा था, ''बहुत सारे बिखरे हुए रब को मानना अच्छी बात है या एक अल्लाह को जो कि क़हर करने वाला भी है।''[9]

हर ज़माने के मुश्रिक (शिर्क करने वाले लोग) ख़ुदा के अलावा दूसरी बहुत सी चीज़ों की पूजा करते रहे हैं और उनका मानना यही रहा है कि इन बुतों के अन्दर भी वह क्वालिटीज़ पाई जाती हैं जो ख़ुदा की सिफ़तों में हैं। इसलिए इनकी पूजा भी की जाना चाहिए। वह बुतों को भी कई हिसाब से ख़ुदा जैसा समझते थे लेकिन क़यामत में जब उन्हें मालूम होगा कि ऐसा नहीं है जैसा वह समझते थे तो वह अपना सर पीटते हुए कहेंगे, ''ख़ुदा की क़सम! हम गुमराही में थे क्योंकि हम तुम्हें दुनिया के रब के बराबर समझते थे।''[10]

क़ुरआन में बहुत सी आयतें यह बात समझाती हैं कि मुश्रिक लोग ख़ुदा पर तो ईमान रखते थे लेकिन उनका यह भी मानना था कि ख़ुदा के अलावा दूसरी चीज़ें भी इस दुनिया में बहुत कुछ करती हैं और इस दुनिया को चलाने में उनका भी हाथ है जिसके लिए उन्हें ख़ुदा से इजाज़त की भी ज़रूरत नहीं है। लेकिन इस्लाम कहता है कि बनाने वाला भी वही है और चलाने वाल भी वही है। उसके अलावा अगर कोई कुछ करता है तो वह अल्लाह की मर्ज़ी और इजाज़त के बिना नहीं कर सकता।

1-सूरए इब्राहीम/10, 2-सूरए रूम/30, 3-सूरए अनकबूत/65, 4-सूरए आले इमरान/195, 5-सूरए तौहीद/1, 6-सूरए तौहीद/4, 7-सूरए रअ़द/16, 8-सूरए रअ़द/62, 9-सूरए यूसुफ़/39

دوماہی مؤمّل لکھنؤ

उमदा तबाअत	عمدہ طباعت
आसान ज़बान	آسان زبان
क़ुर्आनी मालूमात	قرآنی معلومات
अख़्लाक़ी बातें	اخلاقی باتیں
आर्ट गैलरी	آرٹ گیلری
इस्लामिक पज़ल	اسلامک پزل
कामिक्स	کامکس

आज ही मेम्बर बनें
ज़रसालाना
Rs150

द्विमासिक लखनऊ
मुअम्मल
MUAMMAL

AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION
546/203 Near Era's Lucknow Medical College
Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India)
Ph.: 0522-2405646, 9839459672
email: muammal@al-muammal.org

मेरे बन्दे मुझे पुकार!

■ हुज्जतुल इस्लाम मेहदी ख़ुदामियान

मेरे बन्दे!

जब अपनी बेकार की दौड़-धूप से थक जाते हो तो क्या करते हो ? जब इस दुनिया में अकेलेपन का एहसास करते हो तो क्या सोचा करते हो ? जब उम्मीद के सभी दरवाज़े तुम पर बन्द कर दिये जाते हैं तो किस की पनाह में जाते हो ? कहाँ जाना चाहते हो ? मेरे अलावा कौन है जिस से तुम उम्मीद बाँध सकते हो ?

मेरे बन्दे!

मैं जानता हूँ तुझे मुझ पर ईमान है, मैं तेरा ख़ुदा हूँ, तुझे मेरी मेहरबानी पर ईमान है, न जाने कितनी बार तूने मुझे पुकारा है और मुझ से मदद माँगी है, अब भी अपने हाथ मेरे सामने ही फैला, मुझ से माँग ताकि मैं तेरी मदद करूँ। किसी और के पास न जाना, अगर चले गये तो मैं तुझे मायूस कर दूँगा...

मैं जानता हूँ कि तुम्हें अब यह एहसास हो गया है कि तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है। तुम जान चुके हो कि तुम्हारे हाथ ख़ाली हैं। इसलिए अब वक़्त आ चुका है कि मेरी तरफ़ लौट आओ। आओ! मेरी तरफ़ ताकि तुम्हारे दिल में उम्मीद का दरिया बहा दूँ। आओ! मुझ से बात करो।

जानता हूँ कि तुम ग़फ़लत के बियाबान में खो गये हो और दुनिया ने अपने ख़ूबसूरत जलवों से तुम्हें धोखा दिया है। यह दुनिया खोखली है लेकिन तेरे पीछे लगी है, यह तेरा दिल अपनी याद से भर देना चाहती है, शैतान जिसने तुम लोगों के साथ दुश्मनी की क़सम खा रखी है वह भी तुम्हें गुमराह करने के लिए तैयार बैठा है और उसने भी तुम्हें फाँसने के लिए हज़ारों तरह के जाल बिछा रखे हैं...

इस बीच तुम ग़ाफ़िल होकर दुनिया की रंगीनियों मे खो गये हो और अपनी लगाम ढीली छोड़ कर आगे बढ़े जा रहे हो! तुम जाना कहाँ चाहते हो ?क्या ख़ुद भी जानते हो कि यह रास्ता कहाँ जाता है जिस पर तुम चले जा रहे हो ?तुम गुनाहों की वजह से रास्ता भटक गये हो और दुनिया के इस खोखलेपन की वजह से कुछ समझ नहीं पा रहे हो।

इसलिए अब तुम बेमक़सद नज़रों और बेमतलब बातों से थक चुके हो। उन रंगों से ऊब चुके हो जिनमें आसमानी ख़ुश्बू नहीं पाई जाती, तुम्हें हक़ीक़त के पानी की एक बूँद की तलाश है और काफ़ी वक़्त से सुकून का एक घूँट पीने के लिए तरस रहे हो।

ऐसे में किसकी पनाह में जाना चाहते हो ?

मेरी तरफ़ आ जाओ! मेरे पास आओ! मैं बोझल दिलों की पनाह हूँ। मैं मेहरबान हूँ और सब कुछ देने वाला हूँ। शैतान और गुनाहों से भाग कर मेरे पास आओ, मेरे पास आओ ताकि मैं तुम्हें पनाह दे दूँ।

वह बातें जिनमें गुमराही के अलावा कुछ भी नहीं और जो शैतान के दिल को ख़ुश करती हैं उन से बचकर और जो चीज़ें तुम्हारे दिल में अन्धेरा करती हैं उन से भाग कर मेरे पास आओ!

जो चीज़ें ईमान की रौशनी को बुझा देती हैं और तुम्हारे दिल को पत्थर बना देती हैं, उन्हें छोड़ कर मेरी पनाह में आ जाओ! मैं तुम्हें पनाह दूँगा।

तुम्हें किस चीज़ से भागना चाहिए ?

तुम्हें शैतान से, अपने दिल की हवस से, उन इन्सानों से जिनकी कोई हक़ीक़त नहीं, उन रूहों से जो शैतानी ज़ंजीरों में जकड़ हुई हैं, दुनिया के शोर-शराबे से, ज़माने के अन्धेरों से, ग़फ़लत की उस ख़ामोशी से जो हर तरफ़ छाई हुई है, उस लालच से जो तुम्हारी रूह से चिपक गई है और जिसने तुम्हें दुनिया को हासिल करने की दौड़ में लगा दिया है, दुनिया की मोहब्बत से जिसने तुम्हारी रूह को बर्बाद कर दिया है और दुनिया की हर थका देने वाली चीज़ से...

मैंने रूह को ऐसा ही बनाया है कि वह अपने से छोटी चीजों के ज़रिये सुकून नहीं पा सकती। तुम्हारी रूह आसमानी है जो इस ज़मीन से अफ़ज़ल है। इसलिए उसे इन ज़मीनी चीज़ों से सुकून नहीं मिलेगा।

मेरे बन्दे!

तू मेरी नजरों का मोहताज है। मैं तुझे बर्बादी से निकाल कर अपनी रहमत के साये में ले जाना चाहता हूँ। मैं तुझे उन चीज़ों से बचाना चाहता हूँ जो तुझे धोखा देती हैं और मैं मुसीबतों को तेरे रास्ते से हटाना चाहता हूँ।

मैं नहीं चाहता कि तू शैतान के जाल में फंस जाए। मैं तुझे हक़ीक़त दिखाना चाहता हूँ ताकि खोखली चीज़ों में तेरा दिल न लगे।

मेरे बन्दे अपनी आँखें खोल और जो मैं दिखाना चाहता हूँ उसे देख ताकि इस दुनिया से तेरा दिल न लगे और तेरे अन्दर अच्छाईयों के आसमान में उड़ने का शौक़ पैदा हो।

ईद इनाम तो है लेकिन...

■ रूमाना गोन्दल

ईद अल्लाह की तरफ़ से मुसलमानों के लिए एक ख़ास तोहफ़ा है। हर साल ईदुल फ़ित्र और ईदे क़ुर्बान आती है जो हमारे लिए ईद होने के साथ-साथ ख़ुशियों भरा एक ख़ूबसूरत गिफ़्ट भी होता है। इन दो दिनों का इन्तेज़ार मुसलमान साल भर करते हैं और जब यह दोनों दिन आते हैं तो कई-कई दिन पहले से तैयारियाँ शुरु हो जाती हैं। हर मुसलमान ख़ुश होता है और चेहरों पर मुस्कुराहटें नज़र आती हैं। नये-नये और ख़ूबसूरत कपड़े पहने जाते हैं। ज़ायक़ेदार और अच्छे-अच्छे खाने पकाए और खाए जाते हैं। ग़रीबों की मदद की जाती है ताकि वह भी इन ख़ुशियों में शामिल हो सकें। यह ईदें मुसलमानों को नये सिरे से आपस में जोड़ देती हैं। ईद की नमाज़ में काफ़ी भीड़ होती है। इस नमाज़ का एक मक़सद यह भी होता है कि मुसलमानों के दिल आपस में जुड़ जाएं। दिलों को मिलाना इस्लाम का असली काम है क्योंकि इस्लाम बाहर से नहीं बल्कि अंदर से बदलने पर भरोसा करता है।

इसलिए दिलों को बदलने के लिए, दिलों को आपस में जोड़ने के लिए और युनिटी पैदा करने के लिए ईद जैसे मौक़ों पर मुसलमानों की समाजी परवरिश की जाती है। ईदुल फ़ित्र से पहले रमज़ान का पूरा महीना इन्सान की परवरिश का महीना होता है, दिल और अमल बदलने का महीना होता है। दिन को रोज़े में भूखा-प्यासा रहा जाता है और रातों को इबादत की जाती है। भूख-प्यास से उन लोगों की तकलीफ़ का एहसास करवाया जाता है जिन्हें यह नेमतें नहीं मिल पाती हैं। नफ़्स (अपने आप) पर कन्ट्रोल और बर्दाश्त करना सिखाया जाता है। पूरा साल जिन नेमतों को हम लोग दिल खोलकर इस्तेमाल करते हैं और एहसास भी नहीं होता, उनकी क़द्र करना और उनके लिए शुक्र करना सिखाया जाता है। फिर ईद पर वह बड़ी इबादत होती है जिसमें शामिल होने वालों के दिल, ख़ुदा के शुक्र और एक-दूसरे की मोहब्बत से भरे होते हैं।

लेकिन आज यह दोनों त्योहार हर साल आते हैं, पूरे जोश और जज़्बे से मनाए भी जाते हैं लेकिन हमारी ज़िंदगियों में कोई फ़र्क़ नहीं आता। ईद की नमाज़ में भीड़ भी होती है लेकिन न दिल जुड़ते हैं और न कोई असर होता है। इसकी वजह यह है कि एक चीज़ की कमी रह जाती है, और वह है हमारी दीनी परवरिश की कमी। इस एक कमी की वजह से सब कुछ दिखावे तक ही सिमट कर रह जाता है। वह रूहानी ख़ूबसूरती जो आना चाहिए थी वह नहीं आ पाती है। ख़ूबसूरती आ भी कैसे सकती है? जब हम सब की दीनी परवरिश ही नहीं हो रही है।

रमज़ानुल मुबारक का महीना जो दिलों को बदलने आता है अब इस महीने में रोज़े न रखना भी एक फ़ैशन बन गया है

और वह दीनी परवरिश जो इस महीने में भूख प्यास से होना थी, वह हो ही नहीं पाती।

फिर ईद का मौक़ा जो इनाम बन कर आता है उस से भी ख़ुशियों का वह मैसेज नहीं मिल पाता जो मिलना चाहिए था और हमारी ज़िंदगियों में जो बदलाव आना चाहिए वह नहीं आ पाता।

ईद पर बेहतरीन और ख़ूबसूरत कपड़े पहने जाते हैं लेकिन यह कपड़े पहनना असल में दीनी परवरिश थी कि अपने अन्दर की पर्सनॉलिटी को भी ख़ूबसूरत बनाया जाए लेकिन हम ख़ूबसूरत कपड़े तो पहन लेते हैं, कपड़ों की सफ़ाई का भी ख़याल रखते हैं लेकिन दिल के मैल साफ़ नहीं करते, दिलों से दुश्मनी और नफ़रत नहीं निकालते।

फ़ितरा, अपने माल की क़ुर्बानी का नाम है। पूरे महीना ख़ुद भूखे रहकर, हलाल से दूर रहकर दूसरों की मदद की जाती है लेकिन आज हालात यह है कि सोशल मीडिया का ज़माना है और लोग सदक़ा-ख़ैरात के नाम पर ग़रीबों को बुला कर, तस्वीरें बना कर सोशल मीडिया की तरफ़ उछाल देते हैं लेकिन रिश्तेदारों के वाजिब हक़ अदा नहीं करते क्योंकि कहीं नाम सामने नहीं आता।

इन्सान को ख़ुदा ने पैदा किया है। इसलिए अल्लाह से बेहतर कोई नहीं समझ सकता कि इन्सान के लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा। इसलिए इन्सान को वह सब करना है जो उसे ख़ुदा की तरफ़ से हुक्म दिया गया है। अब उसकी मर्ज़ी है कि वह ख़ुशी से करता है या मजबूरी समझ कर करता है।

आइए! इस रमज़ान के मुबारक महीने में अपने अन्दर थोड़ा सा बदलाव लाते हैं। ख़ुशी-ख़ुशी रोज़ा रखने वाले बन जाते हैं, फिर जो ईद हम मनाएंगे वह बेहतरीन ईद होगी। इस ईद से सच में ख़ुशियाँ और बरकतें मिलेंगी क्योंकि ख़ुशियाँ तब मिलती हैं जब हक़दार को उसका हक़ दे दिया जाए।

عید سعید فطر

बन्दों पर अल्लाह का हक़ है कि बन्दे उसका हुक्म मानें, उसकी इबादत करें। रोज़े के बारे में तो अल्लाह ने ख़ास तौर पर एलान कर दिया है कि रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही इसका अज्र (बदला) दूँगा लेकिन हम लोग अल्लाह का हक़ अदा नहीं करते, उसके लिए रोज़े नहीं रखते, लेकिन रमज़ान के बाद यह शिकायत ज़रूर करते हैं कि अब ईद में वह ख़ुशी नहीं रही। अगर हमें लगता है कि रमज़ान का पूरा महीना अल्लाह का हुकम न मानकर, नमाज़ें छोड़ कर और एक ईद की नमाज़ पढ़कर हम रूहानियत की चोटियों पर पहुँच जाएंगे, सेहत और सुकून मिल जाएगा, तो ऐसा सोचना हमारी ग़लती है। सारी ज़िन्दगी वाजिब काम छोड़ कर, बुढ़ापे में मुस्तहब नमाज़ें तक भी पढ़ ली जाएं तो काम पूरा नहीं होता। मुस्तहब नमाज़ें अपनी जगह बहुत बड़ी चीज़ हैं, इसके ज़रिये बड़े-बड़े रुतबे हासिल किये जा सकते हैं लेकिन मुस्तहब इबादतें, वाजिब इबादतों के बग़ैर ऐसे ही हैं जैसे बीमार का खाना-पीना बन्द करके उसे सिर्फ़ दवाईयों पर लगा दिया जाए। दवाईयों की अहमियत से कोई आदमी इनकार नहीं कर सकता लेकिन एक अच्छी ख़ुराक के बग़ैर दवाईयाँ सेहतमन्द जिस्म कभी नहीं बना सकतीं। इसी तरह वाजिब को छोड़ कर सेहतमन्द रूह भी नहीं मिल सकती।

फ़ैसला आज हमारे हाथ में है,
लेकिन हमेशा नहीं रहेगा...। ●

जन्नत के महल की एक ईंट

फ़ज़ल की बातों ने उसे कुछ लम्हों के लिए सुन सा कर दिया था और घर की तरफ़ उसके बढ़ते क़दम रुक से गये थे। हुआ कुछ यूँ था कि हर साल की तरह इस साल भी न चाहने के बावजूद राफ़ेआ और बच्चों की ईद की तैयारी रमज़ान से पहले पूरी नहीं हो सकी थी। उसे फ़ज़ल के जूतों के लिए रमज़ान में बाज़ार का चक्कर लगाना ही पड़ा। वह इफ़्तारी के काम समेट कर फ़ज़ल के साथ अपने शहर की मशहूर और भीड़-भाड़ वाली मार्केट में गई। अभी इफ़्तारी में लगभग एक घंटा बाक़ी था, दुकानों पर रश ऐसा था कि जैसे चीज़ें मुफ़्त बाँटी जा रही हों और जिन दुकानों पर ग़लती से रमज़ान के महीने में डिस्काउन्ट सेल लगी हुई थी वहाँ तो क़यामत का मंज़र था। राफ़ेआ जल्दी से ख़िज़्र का हाथ थामे एक दुकान की तरफ़ बढ़ गई।

फ़ज़ल की आदत थी कि वह हर चीज़ को बहुत ग़ौर से देखा करता था। रास्ते में भी वह माँ से पिछली रात वाले मौलाना साहब की स्पीच के बारे में बातचीत करता रहा था जिसमें उन्होंने रोज़े और इस महीने की बरकतें और सवाब का ज़िक्र किया था ख़ास कर नाप-तौल में कमी के बारे में बात की थी। अभी ख़िज़्र के सवाल-जवाब चल ही रहे थे कि उसको अपने काम की दुकान नज़र आ गई और वह जल्दी से जगह बनाती हुई दुकान के अन्दर चली गई। यह और बात है कि न कितने लोगों की कोहनियाँ उसका मुक़द्दर बनी थीं। किसी तरह राफ़ेआ ने ख़िज़्र का जूता ख़रीद ही लिया। वह जूते पैक करवा रही थी और फ़ज़ल काउन्टर पर जाकर खड़ा हो गया और काउन्टर पर बैठे आदमी को देखने लगा। राफ़ेआ जल्दी से काउन्टर तक पहुँची क्योंकि इफ़्तारी में सिर्फ़ आधा घंटा बचा था। काउन्टर पर बैठा आदमी सर पर टोपी जमाए हाथ में तस्बीह लिये एक मशहूर शेर सुन रहा था:

दुनिया के ऐ मुसाफ़िर मंज़िल तेरी क़ब्र है
तय कर रहा है जो तू दो दिन का यह सफ़र है

इस शेर ने तो राफ़ेआ का ध्यान ही अपनी तरफ़ मोड़ दिया था। उस ने अपने दिल की हालत संभालते हुए दुकानदार को आवाज़ लगाई, "भाई! जल्दी से मेरे जूतों के पैसे काट लीजिए", जिस पर दुकानदार ने जवाब दिया, "बहन! मुझे पता है रोज़ा खुलने वाला है, हमें भी इतनी जल्दी है।" बिस्मिल्लाह कहते हुए 500 का नोट थामा और जूते का डब्बा राफ़ेआ के हाथ में थमा दिया। राफ़ेआ ने जल्दी से फ़ज़ल को बाहर निकलने का इशारा किया और ख़ुद भी बाहर की तरफ़ क़दम बढ़ा दिये। अभी वह दो क़दम ही दूर गये होंगे कि ख़िज़्र ने उसका कन्धा हिला कर सवाल किया, "मम्मी इस जूते की क़ीमत क्या थी?"

उसने जवाब दिया, "495 रुपये"।

"मम्मी! आप ने पाँच रुपये फिर वापस क्यों नहीं लिये?"

"अरे बेटा! लेना भूल गई। पाँच रुपये ही तो थे।"

"दुकान वाले अंकल ने क्यों नहीं वापस किये?" फ़ज़ल ने सवाल किया।

अब राफ़ेआ को ग़ुस्सा आ गया था मगर उसे याद आया कि उसका तो रोज़ा है इसलिए उसने हौसले के साथ जवाब दिया, "बेटा! वह देना भूल गये होंगे और तुम्हें पाँच रुपये की फ़िक्र क्यों सता रही है?"

"मम्मी! आपको पता है वह दुकान वाले अंकल किसी को भी पाँच रुपये वापस नहीं कर रहे थे और न ही वहाँ कोई चन्दे का डब्बा था जिसमें वह पैसे डाल रहे हों।" वह एक लम्हे को रुकी और फिर उसने फ़ज़ल से

पूछा, ''तुम कहना क्या चाह रहे हो? क्या मैं 5 रुपये के लिए लड़ूँ?''

नहीं! मम्मी मैं सिर्फ़ यह कहना चाहा रहा हूँ कि क्या यह काम नाप-तौल की कमी में नहीं गिना जाएगा? कल ही मोलवी साहब ने बताया है कि नाप-तौल में कमी करना एक बहुत बड़ा गुनाह है और आप अपने जायज़ पैसे छोड़ कर इस गुनाह में बराबर की शरीक हो रही हैं। वह भी रोज़े की हालत में।''

12 साल के बेटे की बातों ने उसे लम्हे भर को सुन्न कर दिया था। बस एक पल लगा उसे फ़ैसला करने में और वह फ़ज़ल के साथ दोबारा दुकान पर जा खड़ी हुई। फ़ज़ल एक क़दम आगे बढ़ा और दुकानदार से बोला, ''अंकल! आपने हमारे पाँच रुपये वापस नहीं किये थे?'' दुकानदार ने हैरत और ग़ुस्से से फ़ज़ल को देखा क्योंकि उसे दुकान बन्द करने की पड़ी थी, वह मज़ाक़ के अन्दाज़ में फ़ज़ल से बोला, ''बेटा! इस पाँच रुपये से महल बनाओगे क्या?''

''सॉरी अंकल! इस 5 रुपये से महल तो नहीं बनेगा लेकिन हाँ! मैं आपका और शायद अपनी मम्मी का भी दोज़ख़ में एक कमरा बनने से ज़रूर बचा लूँगा, इन्शाअल्लाह!''

उसकी यह बात सुनते ही दुकानदार ने फ़ौरन पाँच रुपये लौटा दिये।

फ़ज़ल ने मुस्कुरा कर दुकानदार की तरफ़ देखा और कहा, ''अंकल! ऐसा भी हो सकता है कि रमज़ान की बरकत से इस ग़लती को सुधारने के बदले जन्नत में हमारे महल की एक ईंट ज़रूर बन जाए।'' राफ़ेआ और दुकानदार ने मुस्कुरा कर उस बच्चे को देखा जिसने उनकी आँखें खोल दी थीं और उस गुनाह से बचा लिया था जिसे वह अब तक गुनाह समझते ही नहीं थे।

राफ़ेआ के दिल का सुकून इस बात की गवाही दे रहा था कि उसकी मुटठी में दबा यह पाँच का सिक्का उनके लिए ज़रूर जन्नत में महल की एक ईंट साबित होगा।

और फिर उसने घर की तरफ़ क़दम बढ़ा दिये थे। ●

■ हुज्जतुल इस्लाम मोहसिन अब्बासी

मज़बूत जिस्म मज़बूत रूह मज़बूत सोच

हम में से कोई भी कमज़ोर बन कर नहीं रहना चाहता बल्कि हर एक हर हिसाब से मज़बूत बनना चाहता है। इसलिए हम जितना भी अपने अन्दर ताक़त और मज़बूती का एहसास करते हैं, उसी के हिसाब से तरह-तरह के काम करते हैं।

हम यहाँ ताक़त व कमज़ोरी को तीन एंग्लिस पर ध्यान देंगे यानी जिस्म, रूह और सोच के हिसाब से मज़बूत या कमज़ोर होना। मान लीजिए कि एक्सर्साइज़ जिस्मानी ताक़त पाने का एक बहुत बड़ा सोंस है, इबादत रूहानी ताक़त पाने का एक रास्ता है और स्टडी से इन्सान की सोच मज़बूत होती है।

दीन ताक़त और मज़बूती के इन तीनों एंग्लिस को अहमियत देता है लेकिन इस बात को सामने रखते हुए कि दीन इन्सान को ख़ुदा का बन्दा बनाने आया है। इसलिए इन्सानी ताक़त को हर एंग्लि से ख़ुदा का बेहतरीन बन्दा बनने की तरफ़ मोड़ना बहुत ज़रूरी है।

हमारा जिस्म मज़बूत होना चाहिए ताकि कमज़ोरी अल्लाह की बन्दगी के रास्ते में रुकावट न बने।

हज़रत अली[अ०] दुआए कुमैल में फ़रमाते हैं: ''मेरे रब! मेरे रब! मेरे रब! मेरे जिस्म को और जिस्म के हर हिस्से को अपनी ख़िदमत के लिए मज़बूत बना दे।''

रूहानी तौर पर मज़बूत होना भी ज़रूरी है ताकि अपने मक़सद तक पहुँचने के रास्ते में हम इन्सान उन ख़्वाहिशों से बच सकें जिनमें उलझ जाने से हम ख़ुदा से दूर हो जाते है।

इमाम सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं: ''एक दिन पैग़म्बरे अकरम[अ०] कुछ जवानों के पास से गुज़रे। वह सब एक पत्थर को उठाने की कोशिश कर रहे थे।

अल्लाह के रसूल[अ०] ने पूछा: तुम लोग ऐसा क्यों कर रहो हो?

उन्होंने कहा: हम यह देखना चाहते हैं कि हम में ज़्यादा ताक़त वाला कौन है?

अल्लाह के रसूल[अ०] ने फ़रमाया: क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि तुम में ज़्यादा ताक़त वाला कौन है?

सब कहने लगे: ''हाँ! बिल्कुल बताइए अल्लाह के रसूल!''

अल्लाह के रसूल[अ०] ने कहा: ''तुम लोगों में सबसे ज़्यादा ताक़त उसके पास है कि अगर उसे कोई ख़ुशी मिले तो वह ख़ुशी उसे बातिल की तरफ़ न ले जाए और अगर किसी चीज़ पर उसे ग़ुस्सा आए और वह नाराज़ हो जाए तो ग़ुस्सा उसे हक़ से दूर न कर दे।''

फ़िक्र व सोच का मज़बूत होना भी ज़रूरी है ताकि इन्सान बन्दगी के रास्ते में सीधे रास्ते से भटक न जाए और कहीं ऐसा न हो कि वह अपने मक़सद तक ही न पहुँच सके।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं: ''जो सोचे-समझे बिना इबादत करता है, वह चक्की के उस गधे की तरह है जो चक्की का चक्कर काटता रहता है लेकिन कहीं नहीं पहुँचता बल्कि जहाँ से शुरु करता है, वहीं आकर रुक जाता है।''

●●●

शबे क़द्र के आमाल

शबे क़द्र की फ़ज़ीलत

शबे क़द्र से अच्छी और अफ़ज़ल पूरे साल में दूसरी कोई रात नहीं है। इस रात के आमाल हज़ार महीनों के आमाल से बेहतर हैं। इस रात में इन्सान की एक साल की तक़दीर लिखी जाती है। इस रात में फ़रिश्ते ख़ुदा के हुक्म से ज़मीन पर नाज़िल होते हैं और इमामे ज़माना[अ०] की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं और जो कुछ भी इन्सान के लिए मुक़द्दर हुआ है इमाम[अ०] की ख़िदमत में पेश करते हैं।

शबे क़द्र के आमाल

19 वीं, 21 वीं और 23 वीं रात के आमाल

(1) ग़ुस्लः अल्लामा मजलिसी ने फ़रमाया है कि इन रातों के ग़ुस्ल को सूरज के छिपने के वक़्त बजा लाए ताकि मग़रिब व इशा उसी ग़ुस्ल से बजा लाए।

(2) नमाज़ः दो रकअत नमाज़ इस तरह से कि हर रकअत में सूर-ए-हम्द के बाद सात बार सूरए तौहीद पढ़े और नमाज़ के बाद 70 बार **"अस्तग़फ़िरुल्लाहा व अतूबु इलैह"** पढ़े। हदीस में इस नमाज़ के सवाब के बारे में आया है कि जो शख़्स इस नमाज़ को पढ़ेगा अपनी जगह से नहीं उठेगा कि ख़ुदा उसको और उसके माँ-बाप को बख़्श देगा।

(3) दुआ और क़ुरआनः क़ुरआन मजीद को खोले और अपने सामने रखकर ये दुआ पढ़ेः

अल्लाहुम-म इन्नी अस्अलु-क बिकिताबिकल मुन्ज़ल। व मा फ़ीहि व फ़ीहिस्मुकल अकबर। व अस्माउकल हुस्ना। व मा युख़ाफ़ु व युरजा। अन्तज अ-ल-नी मिन उ-त-क़ाइ-क मिनन्नार।

तर्जुमाः परवरदिगार! मैं तुझसे तेरी नाज़िल की हुई किताब के ज़रिये सवाल करता हूँ और जो कुछ इसमें है और इसमें तो तेरा सबसे बड़ा नाम है और तेरे असमाए हुस्ना हैं और हर वह चीज़ है जिस से डरा जाता है और वह सारी चीज़े हैं जिनकी उम्मीद लगाना चाहिए, उन सबका वास्ता दे कर तुझसे सवाल करता हूं कि मुझे उन लोगों में से क़रार दे जिनको तूने जहन्नम की आग से आज़ाद किया है।

(4) इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] फ़रमाते हैं कि इसके बाद क़ुरआन सर पर रखकर कहेः

अल्लाहुम-म बिहक़्क़ि हाज़ल क़ुरआन। व बिहक़्क़ि मन अरसल्तहू बिह। व बिहक़्क़ि कुल्लि मोमिनि-न मदहतहू फ़ीह। व बिहक़्क़ि-क अलैहिम फ़ला अ-ह-द आरफ़ु बिहक़्क़ि-क मिन्क़।

तर्जुमाः परवरदिगार इस क़ुरआन के वास्ते से और उस अज़ीम हस्ती के वास्ते से जिसको तूने यह क़ुरआन देकर भेजा है और हर उस मोमिन का वास्ता जिसकी तूने इस में तारीफ़ की है। और तेरे उस हक़ का वास्ता जो उन पर है। और हक़ तो यह है कि कोई भी तुझसे ज़्यादा तेरे हक़ को पहचानने वाला नहीं है।

फिर कहेः

दस बारः बि-क या अल्लाहु	ऐ अल्लाह ! तुझे ख़ुद तेरा वास्ता
दस बारः बि मुहम्मदिन	हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] का वास्ता
दस बारः बि अलीयिन	हज़रत अली[अ०] का वास्ता
दस बारः बि फ़ाति-म-ता	हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] का वास्ता
दस बारः बिल ह-स-नि	इमामे हसन[अ०] का वास्ता

दस बारः बिल हुसैनि	इमामे हुसैन[अ॰] का वास्ता
दस बारः बि अली यिब्निल हुसैनि	इमामे ज़ैनुल आबेदीन[अ॰] का वास्ता
दस बारः बि मुहम्मदिब्नि अलीयिन	इमामे मुहम्मद बाक़िर[अ॰] वास्ता
दस बारः बि जाफ़रिब्नि मुहम्मदिन	इमामे जाफ़र सादिक़[अ॰] का वास्ता
दस बारः बि मूसब्नि जाफ़रिन	इमामे मूसा काज़िम[अ॰] का वास्ता
दस बारः बि अली यिब्नि मूसा	इमामे अली रज़ा[अ॰] का वास्ता
दस बारः बि मुहम्मदिब्नि अलीयिन	इमामे मुहम्मद तक़ी[अ॰] का वास्ता
दस बारः बि अली यिब्नि मुहम्मद	इमामे अली नक़ी[अ॰] का वास्ता
दस बारः बिल हसनिब्नि अलीयिन	इमामे हसन असकरी[अ॰] का वास्ता
दस बारः बिल हुज्जतिल क़ाइमि	हज़रत हुज्जतिल क़ाएम[अ॰] का वास्ता

फिर जो हाजत रखता हो तलब करे।

(5) ज़ियारत इमामे हुसैन[अ॰]: शबे क़द्र में एक मुनादी आवाज़ देता है कि जो भी इमामे हुसैन[अ॰] की क़ब्र की ज़ियारत के लिए आया है ख़ुदा ने उसको बख़्श दिया।

(6) दुआए जौशन कबीर : इसलिए कि इसमें ख़ुदा के हज़ार नाम हैं।

फिर ये दुआ पढ़ेः

अल्लाहुम्मज अल फ़ीमा तक़ज़ी व तुक़द्दिरु मिनल अमरिल महतूम। व फ़ीमा तफ़रुक़ु मिनल अमरिल हकीमि फ़ी लैलतिल क़द्र। व फ़िल क़ज़ाइल्लज़ी ला युरद्दु वला युबद्दल। अन्तक तु-बनी मिन हुज्जाजि बैतिकल हराम। अल मबरूरि हज्जुहुम। अल मशकूरि सअ्युहुम। अल मग़फ़ूरि ज़ुनुबुहुम। अल मुकफ़्फ़रि अनहुम सय्यिआतुहुम। वजअल फ़ीमा तक़ूज़ी। व तुक़द्दिर अन तुती-ल उमरी। व तुवस्सि-अ अलै-य फ़ी रिज़क़ी। व तफ़अल बी।

21 वीं रात के ख़ास आमाल

इस रात की फ़ज़ीलत उन्नीसवीं रात से ज़्यादा है। **ग़ुस्ल, ज़ियारते इमाम हुसैन[अ॰], नमाज़ में सात बार "क़ुल हुवल्लाह", क़ुरआन सर पर रखना और दुआए जौशने कबीर** पढ़ने के अलावा इस रात की ख़ास दुआएं हैं जो मफ़ातीहुल जिनान में लिखी हुई हैं।

23 वीं रात

यह रात उन्नीसवीं और इक्कीसवीं रात से भी अफ़ज़ल है और बहुत सी हदीसों के मुताबिक़ यही शबे क़द्र है। पैग़म्बरे अकरम[स॰] रमज़ान की आख़री दस रातों में अपने बिस्तर को इबादत के लिए समेट देते थे और तेईसवीं रात में अपने घर वालों को जगाए रखते थे। जो सो जाता था उसके चेहरे पर पानी डालकर जगाते थे ताकि इस रात की बरकतों से महरूम न हो।

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[अ॰] इस रात में किसी को अपने घर में सोने नहीं देती थीं, रात में जागने के लिए दिन में सोने का हुक्म देती थीं और खाने में कमी करती थीं। आप फ़रमाती थीं कि वह शख़्स महरूम है जो इस रात की बरकत को हासिल न कर सके।

रिवायत में है कि एक बार इमाम सादिक़[अ॰] सख़्त मरीज़ थे। यहाँ तक कि 23 रमज़ान की रात आ गयी। आपने फ़रमाया कि मुझे मस्जिद में ले जाया जाए। इमाम[अ॰] इस रात सुबह तक मस्जिद में थे।

23 वीं रात के ख़ास आमाल

(1) दुआए फ़रज

अल्लाहुम-म कुल-लि वलीयिकल हुज्जतिब्निल हसन। स-ल-वातु-क अ़लैहि व अला आबाइह। फ़ी हाज़िहिस्साअह। व फ़ी कुल्लि साअ़ह। वलीयंव व हाफ़िज़ा। व क़ाइदंव व नासिरा। व दलीलंव व ऐ़ना। हत्ता तुसकि नहु अर-ज़-क तौ़आ़। व तुमत्तिअ़हु फ़ीहा त़वीला।

(2) दुआए मकारिमुल अख़लाक़ पढ़ना।

(3) क़ुरआनी सूरेः सूरए अनकबूत, सूरए रूम, सूरए हा-मीम और सूरए दुख़ान पढ़ना।

(4) सूरए क़द्रः हज़ार बार सूरए क़द्र पढ़ना।

(5)-ग़ुस्लः रात के पहले हिस्से के अलावा आख़री हिस्से में भी ग़ुस्ल करना।

21 और 23 वीं रात के बेहतरीन आमाल

शैख़ सदूक़ ने लिखा है कि इन दो रातों का बेहतरीन अमल इल्मी गुफ़्तगू और इल्मी मसाएल पर ग़ौर करना है।

इस्तेग़फ़ारः इमामे सादिक़[अ॰] फ़रमाते हैं, "जिसकी माहे रमज़ान में मग़फ़िरत न हो सके तो दूसरे महीने में भी नहीं हो सकती। यहाँ तक कि अरफ़ा का दिन आ जाए।" ●

नक़्शा

तर्के सहर और इफ़्तार

माहे रमज़ान

2020

(लखनऊ)

रमज़ान	अप्रेल	तर्के सहर	अज़ाने सुबह	मग़रिब और इफ़्तार	लखनऊ के वक़्त से ज़्यादती		लखनऊ के वक़्त से कमी	
1441	2020	AM	AM	PM	शहर	मिनट	शहर	मिनट
1	25	3:57	4:12	6:48	अहमदाबाद	32	इलाहाबाद	5
2	26	3:56	4:11	6:48	आगरा	12	आज़मगढ़	9
3	27	3:54	4:09	6:49	इन्दौर	21	अयोध्या	5
4	28	3:53	4:08	6:49	उन्नाव	2	बाराबंकी	2
5	29	3:52	4:07	6:50	बदायुं	8	बस्ती	8
6	30	3:51	4:06	6:51	बरेली	6	बनारस	8
7	मई	3:50	4:05	6:52	मुम्बई	23	बलिया	12
8	2	3:49	4:04	6:52	बेंगलौर	17	बहराइच	4
9	3	3:48	4:03	6:53	भोपाल	14	बांदा	6
10	4	3:47	4:02	6:53	पीलीभीत	5	भागलपूर	19
11	5	3:46	4:01	6:54	झांसी	10	पटना	18
12	6	3:45	4:00	6:54	हैदराबाद	10	प्रतापगढ़	5
13	7	3:44	3:59	6:55	दिल्ली	15	पुरनीया	27
14	8	3:43	3:58	6:56	देहरादून	12	जौनपुर	8
15	9	3:42	3:57	6:56	रामपूर	8	दरभंगा	20
16	10	3:42	3:57	6:57	श्रीनगर	21	रांची	18
17	11	3:41	3:56	6:57	सहारनपुर	14	छपरा	16
18	12	3:40	3:55	6:58	सीतापुर	1	रायबरेली	4
19	13	3:39	3:54	6:58	शाहजहांपुर	4	सीवान	14
20	14	3:38	3:53	6:59	अलीगढ़	12	24 परगना	30
21	15	3:37	3:52	7:00	फ़तेहपुर	3	ग़ाज़ीपूर	11
22	16	3:37	3:52	7:00	कानपुर	3	फ़ैज़ाबाद	5
23	17	3:36	3:51	7:01	गवालियार	12	कोलकाता	30
24	18	3:35	3:50	7:01	मद्रास	3	खीरी	1
25	19	3:34	3:49	7:02	मुरादाबाद	9	गोण्डा	4
26	20	3:34	3:49	7:02	मेरठ	13	गोरखपुर	10
27	21	3:33	3:48	7:03	मुज़फ़्फ़रनगर	12	मऊ	11
28	22	3:32	3:47	7:03	नागपुर	21	मोनगीर	12
29	23	3:32	3:47	7:04	नैनीताल	6	मिर्ज़ापुर	7
30	24	3:31	3:46	7:05	हरदोई	4	मुज़फ़्फ़रपुर	19

(मुरत्तबा: हुज्जतुल इस्लाम मौलाना अदीबुल हिन्दी ताब सराह)

सहरी की दुआ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
या मफ़ज़ई इन–द कुरबती। व या ग़ौसी इन–द शिद्दती। इलै–क फ़ज़ेअ़तु, व बिकस्तग़स्तु, व बि–क लुज़्तु, ला–अलूज़ु बि सिवाक। वला अतलुबुल फ़–र–ज इल्ला मिन्क्।
फ़–अग़िस्नी व फ़रिज अन्नी। या मंय यक़बलुल यसीर व यअ़फ़ू अनिल कसीर। इक़बल मिन्निल यसीर। वअ़फ़ु अन्निल कसीर। इन–न–क अन्तल ग़फ़ूरूर्रहीम। अल्लाहुम–म इन्नी अस्अलु–क ईमानन तुबाशिरु बिहि क़ल्बी। व यक़ीनन सादिक़ा। हत्ता आलमाअन्नहू लयं युसीबनी इल्ला मा कतब–त–ली व रज़िनी मिनल ऐशि बिमा क़सम–त–ली या अरहमर्राहिमीन। या उद्दती फ़ी कुरबती, व या साहिबी फ़ी शिद्दती, व या वलिय्यी फ़ी नेअ़मती, व या ग़ायती फ़ी र–ग़–ब–ती, अन्तस्सातिरु औरती, वल आमिनु रौअती, वल मुक़ीलु अस्रती, फ़ग़फ़िरली ख़तीअती, या अरहमर्राहिमीन।

तर्जुमाः ऐ तकलीफ़ के वक़्त मुझे पनाह देने वाले, ऐ कठिन घड़ी में मेरी फ़रयाद सुनने वाले, मैं तेरी ही पनाह में हूं और तुझसे ही फ़रयाद की है, तुझसे ही लौ लगाता हूं, तेरे अलावा किसी से लौ नहीं लगाता और न तेरे अलावा किसी से खुशहाली का सवाली हूं। तो अब तू मेरी फ़रयाद को सुनले और मेरी तकलीफ़ को दूर करदे। ऐ वह! जो थोड़ी सी नेकी को भी क़बूल कर लेता है और बहुत ज़्यादा गुनाह माफ़ कर देता है। मेरे थोड़े से आमाल को क़बूल कर ले और मेरे बहुत सारे गुनाहों को माफ़ कर दे। तू ही बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबानी करने वाला है। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे ऐसा ईमान चाहता हूं कि जो मेरे दिल में जगह बना ले और ऐसा सच्चा यक़ीन देदे कि मैं यह जान लूं कि जो कुछ भी तूने मेरे लिए लिख दिया है उसके अलावा मुझे कुछ नहीं मिल सकता और मुझको ऐसी ज़िन्दगी पर राज़ी करदे जो तूने मेरे लिए मोअय्यन कर दी है। ऐ सबसे ज़ियादा रहम करने वाले, ऐ तकलीफ़ के वक़्त मेरी पूंजी, सख़्ती में हमदम, ऐ मुझे नेअ़मत देने वाले और मेरी तवज्जोह के मरकज़! तू ही मेरे ऐबों को छुपाने वाला है और डर व दहशत के माहौल में इतमीनान देने वाला है। मेरी लग़ज़िश व ग़लती को बख़्श दे। ऐ रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।

इफ़्तार की दुआ

अल्लाहुम–म ल–क सुम्तु
व अला रिज़्क़ि–क अफ़्तरतु
व अलै–क तवक्कलतु।

तर्जुमाः परवरदिगार मैंने तेरे लिये रोज़ा रखा और तेरी रोज़ी से इफ़्तार किया और मैंने तुझ पर तवक्कुल किया।

हर वाजिब नमाज़ के बाद पढ़ी जाने वाली दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْ عَلٰى اَهْلِ الْقُبُوْرِ السُّرُوْرَ اَللّٰهُمَّ اَغْنِ كُلَّ فَقِيْرٍ اَللّٰهُمَّ اشْبِعْ كُلَّ جَائِعٍ اَللّٰهُمَّ اكْسُ كُلَّ عُرْيَانٍ اَللّٰهُمَّ اقْضِ دَيْنَ كُلِّ مَدِيْنٍ اَللّٰهُمَّ فَرِّجْ عَنْ كُلِّ مَكْرُوْبٍ اَللّٰهُمَّ رُدَّ كُلَّ غَرِيْبٍ اَللّٰهُمَّ فُكَّ كُلَّ اَسِيْرٍ اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ كُلَّ فَاسِدٍ مِّنْ اُمُوْرِ الْمُسْلِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اشْفِ كُلَّ مَرِيْضٍ اَللّٰهُمَّ سُدَّ فَقْرَنَا بِغِنَاكَ اَللّٰهُمَّ غَيِّرْ سُوْءَ حَالِنَا بِحُسْنِ حَالِكَ اَللّٰهُمَّ اقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَاَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

अल्लाहुम–म अद्ख़िल अ़ला अहलिल कुबूरिस्सुरूर। अल्लाहुम्मग़नि कुल–ल फ़क़ीर। अल्लाहुम्मशबिअ् कुल–ल जाए। अल्लाहुम्मकसु कुल–ल उरयान। अल्लाहुम्मक़्ज़ि दै–ना कुल्लि मदीन। अल्लाहुम–मा फ़रिज अनकुल्लि मकरूब। अल्लाहुम–मा रुद–द कुल–ल ग़रीब। अल्लाहुम–म फ़ुक–का कुल–ला असीर। अल्लाहुम–म असलिह कुल–ला फ़ासिदिम्मिन उमूरिल मुस्लिमीन। अल्लाहुम्मश्फ़ कुल–ला मरीज़। अल्लाहुम–मा सुद–दा फ़क़रिना बिग़िनाक। अल्लाहुम–मा ग़ैय्यिर सू–अ हालिना बिहुस्नि हालिक। अल्लाहुमक़्ज़ि अन्नद्दै–ना व अग़निना मिनल्फ़क़्र। इन–न–का अला कुल्लि शैइन क़दीर।

तर्जुमाः ऐ अल्लाह क़ब्र में दफ़न होने वालों को ख़ुश कर दे, ऐ अल्लाह हर फ़क़ीर को ग़नी कर दे, ऐ अल्लाह सारे भूखों का पेट भर दे, ऐ अल्लाह हर बेलिबास को लिबास अ़ता कर दे, ऐ अल्लाह हर कर्ज़दार के क़र्ज़ को अदा कर दे, ऐ अल्लाह हर परेशान हाल के ग़म को दूर कर दे, ऐ अल्लाह हर मुसाफ़िर को उसके वतन तक पहुंचा दे, ऐ अल्लाह तमाम क़ैदियों को क़ैद ख़ानों से आज़ाद करा दे, ऐ अल्लाह मुसल्मानों के बिगड़े कामों को बना दे, ऐ अल्लाह हर मरीज़ को शिफ़ा अता फ़रमा, ऐ अल्लाह अपनी तवंगरी के ज़रिए हमारी ग़ुरबत को दूर कर दे, ऐ अल्लाह हमारी बुरी हालत को अपने बेहतरीन करम से बदल दे, ऐ अल्लाह हमारे क़र्ज़ को अदा कर दे और हमारी ग़ुरबत को अमीरी में बदल दे। बेशक तेरी ज़ात हर काम पर क़ुदरत रखने वाली है।

Subscription Form

हां, मैं, नीचे लिखी स्कीम के तहत ***मरयम*** की सब्सक्राइबर बनना चाहती/चाहता हूं। S.No.:...............

निशान	साल	इश्यूज़	सालाना कवर कीमत	आप दें
☐	1 Year	12	360	360
☐	2 Year	24	720	700
☐	3 Year	36	1080	1000

*Name: Mr./Mrs./Miss ______ Date of birth: Day ___ Month ___ Year ____

*Father/Husband'sName: ______

Education: ______ Profession: ______

*Address: H/No: ______

Post : ______

City/Vill.: ______ Distt.: ______ State: ______ Country.: ______

Land Mark.: ______ Pin: ______ P.O.Box No.: ______

*Mobile No: ______ Phone (Res) ______

e-mail: ______

मौजूदा सब्सक्राइबर्स अपनी कस्टमर ID लिखें: ______ Date .... Signature............................

For Office Use:

subscription from...............................to..........................Subscription ID ______ Receipt no. ....

Address: 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

सब्सक्राइबर्स सुविधाएं अगले अंक से उपलब्ध होंगी. समस्त विवाद केवल लखनऊ के सक्षम न्यायालयों और फोरमों के विशिष्ट अधिकार क्षेत्र के अधीन है.

यह आर्डर फार्म भेजी जाने वाली रकम के साथ भेजें। *नियम व शर्तें लागू।

मैग्ज़ीन नार्मल डाक से भेजी जाती है। रजिस्टर्ड डाक से मंगाने के लिए Rs. 240 और देना होंगें।

Monthly Magazine

मरयम

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 email: maryammonthly@gmail.com

इजाज़ा

मरयम मैग्ज़ीन को ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए इसको लागत से आधी क़ीमत पर रीडर्स को दिया जाता है जिसकी वजह से इदारे को आप सभी लोगों की फ़ाइनेंशल मदद की सख़्त ज़रूरत है।

हमारी कोशिश है कि इस मैग्ज़ीन के ज़रिए दीनी मालूमात को बेहतरीन क्वालिटी में आप सभी लोगों तक पहुंचाया जाता रहे।

TAHA FOUNDATION

AN ISLAMIC SOCIOL-WELFARE ORGANISATION

LUCKNOW-INDIA

Ref: TF/02/13 Date: 04/03/2013

بسمه تعالی

محضر مبارک حضرت آیة الله العظمی سید علی سیستانی دامت برکاتکم

سلام علیکم ورحمة الله و برکاته

با عرض سلام و آرزوی سلامتی حضرتعالی و اسلام و مسلمین بعرض می رساند که موسسه طه که با همت عده ای از فضلا و فارغ التحصیلان قم برای انجام امور دینی فرهنگی و اجتماعی که باعث پیشرفت مسلمانان و سبب بیداری آنان باشد، تشکیل شده است و حدودا ۱۴ سال است فعالیتهای ذیل را در زمینه های مختلف انجام می دهد :

۱. راه اندازی شبکه تلویزیون طه
۲. ایجاد استودیو و مرکز پخش تولید
۳. راه اندازی مجله ماهیانه ویژه بانوان بنام "مریم" به زبان هندی که در حال حاضر به ۱۰۶ شهرستان های هندوستان ارسال می شود و به نصف قیمت به فروش می رسد.
۴. راه اندازی سایت www.wahabiyat .com
۵. راه اندازی سایت www.ishraaq.in
۶. برگزاری سمینار، همایش و نشستهای علمی
۷. ترجمه و چاپ کتابهای مذهبی

همین طور برای آینده امور ذیل را برنامه ریزی کرده است :

راه اندازی سایت maryammagazine.com
راه اندازی شبکه ماهواره ای طه
راه اندازی حوزه علمیه در هندوستان طبق نیاز های روز
راه اندازی مدارس غیر انتفاعی

Imambara Ghufraan Maab, Chowk- Lucknow ... 9936653509 tahafoundation@gmail.com

btktk vk;rYykg lhLrkuh

TAHA FOUNDATION

AN ISLAMIC SOCIAL WELFARE ORGANISATION

P.O.Box No.:27 Chowk Lucknow UP-India

Chief Patron : Imam-e-Zamana (a.s.)
Patron : Syed Kalbe Jawad Naqvi
Founder : Syed Nazar Abbas Rizvi
President : S.Mohd. Faiyyaz Baqer
Vice President : Akhter Abbas Joun Khan
General Secretary : Qamar Mehdi
Joint Secretary : Syed Ali Zafar Zaidi
Asst. Secretary : Syed Mohd. Hasan Naqvi
Propagation Secretary : Abbas Asghar Shabrez
Treasurer : Syed Mohd. Aqeel Zaidi

بسمه تعالی

محضر مبارک

رهبر معظم انقلاب اسلامی

حضرت آیة الله العظمی آقای سید علی حسینی خامنه ای دام ظلکم العالی

سلام علیکم و رحمة الله و برکاته

P.O. Box :4167, QUM IRAN Phone : (+98-251)6607437, 7720901-8 Ext.: 820, 476, 339, E-Mail: taha_foundation@yahoo.com, www.ishraaq.net

btktk vk;rYykg [kkeub

RNI NO. UPHIN/2012/43577

ENGLISH MEDIUM

taha
SCHOOL

Our Focus

- CBSE Curriculum
- Low Student-Teacher ratio
- Interactive teaching techniques
- Loving and caring atmosphere
- Qualified & Dedicated Teachers
- Deeni Taleem

ADMISSION OPEN

Pre-School To Class V

Pre-School Also Available

MUSAHIB GANJ, LUCKNOW

8840206083, 6392442920